।। श्री गोभ्यः नमः।।

हिन्दी मासिक

कामधेनु-कल्याण

जनवरी-2012

श्री गोधाम महातीर्थ आनन्दवन, पथमेड़ा

वर्षः 6

Web. www. Pathmedagodarshan.org
Email: k.k.p.pathmeda@gmail.com

अंक :7

सम्पादकीय

सुरभी संदेश

हे प्रिय गोवत्सों ! सावधान होकर समय की पहचान करो। आज मानव जाति मेरी सन्तान अखिल गोवंश के महत्व से अनभिज्ञ होती जा रही है। माता का मूल्याकंन केवल आर्थिक उपयोगिता व अनुपयोगिता के आधार किया जा रहा है। यह काल का ही दुष्प्रभाव है अन्यथा जिस संस्कृति व देश में गाय को जगत माता तथा बैल को जगत पिता के रूप में अनादि काल से स्वीकार किया गया हो उसी संस्कृति व सभ्यता के संवाहक देश में मां-बाप का मूल्याकंन केवल मुद्रांकके रूप में किया जाय। इससे बड़ी मूर्खता एवं दुर्भाग्य क्या हो सकता है। जिस गाय व वृषभ ने युगों तक मानव जाति को माता-पिता से भी अधिक वात्सल्य एवं सात्विक पोषण प्रदान किया हो, जिन्होंने स्वास्थ्य, संस्कार, समाधान और अक्षय समृद्धि राष्ट्र को प्रदान की हो उनको साधारण पशु मानकर उसकी उपेक्षा तथा तिरस्कार करके अपने सर्वनाश व घोर पतन का आहवान करने वाले देश तथा समाज का भविष्य क्या हो सकता है ? हे प्यारे ! गोवत्सों आप स्वयं विचार करलो, निर्णय कर लो। हे मेरे आत्मजों ! जिस देश व समाज के पूर्वज तत्वज्ञ, विज्ञानवेता, महामनिषियों ने दीर्घकालिन तपस्या एवं अनवेषणों द्वारा सृष्टि चक्र के सुचारू रूप से संचालनार्थ, राष्ट्र रक्षार्थ, मानव जाति के परम कल्याणर्थ तथा अक्षय समृद्धि के प्राप्तियार्थ प्रमुख आधार स्तम्भ के रूप में केवल गोवंश कोसर्वोपरि स्वीकार किया हो उसी देश में उन्हीं की संतान इतनी वैचारिक निर्बलता को प्राप्त हो गई इतनी कृतघ्नी हो गई कि अपने माता-पिता को आज अनुपयोगी समझ बैठी। हाय-हाय ऐसा बौद्धिक देवालियापन इस पवित्र भारत वर्ष की भूमि पर कभी नहीं आया जो अपने परम हितेषियों को भार समझने लग जाय।

हे गोवत्सों ! यही विपरित बुद्धि का परिणाम है तो अनर्थ का अर्थ और अर्थ का अनर्थ माना जा रहा है । वास्तव में गोवंश की सेवा, पूजा, रक्षा, संर्वधन ही सभी प्रकार की आर्थिक समृद्धियों का प्रधान स्रोत हैं। वर्तमान की शोषक व संहारक पद्धति पर आधारित अर्थ व्यवस्था तो केवल दानवी बुद्धि द्वारा फैलाया हुआ माया जाल का चर्म पात्र है। जो भंयकर धोखा देकर किसी क्षण नष्ट हो सकता है। अनेकों के विनाश से कुछेकों का विकास करने का पथ प्राकृतिक न्याय के विरोध है। जो भविष्य में सबके महा विनाश का कारण बनेगा।

अतः हे पुत्रों ! तुम मेरे अपने हो इसलिये तुम्हें बताती हूँ कि सबके विकास व उत्थान में अपना विकास तथा उत्थान है। इस वैदिक सिद्धान्त को स्वीकार करके और बात गहराई से समझकर सबके विकास व उत्थान का आधार मेरी संतान गोवंश की पूज्याभाव से उपासना, आराधना सेवा व संरक्षण को अपने जीवन में प्राथमिकता प्रदान कर स्वयं अनुभव करें । बस आज इतना ही कहुँगी।

आपकी अपनी माँ सुरभि

।। वन्दे धेनुमातरम् ।।
यया सर्वमिदं व्याप्तं जगत् स्थावरजंगमम्। तां धेनुं शिरसा वन्दे भूतभव्यस्य मातरम्।।

वर्षः6 **dke/ku&dY;k.k** अंकः7

वि.सं. पोष शुक्ल पक्ष 2068 जनवरी – 2012

अनुक्रमणिका

1. ***सम्पादकीय*** 2
2. ***साधक संजिवनी*** ❖ *राग–द्वेष पर विजय पाने के उपाय* 4
3. ***श्रीकामधेनु कृपा प्रसाद*** ❖ *परम भागवत* ***गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी*** *महाराज के प्रवचन (गोवत्सव पाठशाला– 2011)* 5
4. ***गोभागवत कथा–2010*** ❖ *परम पूज्य द्वाराचार्य श्रीमंहत श्रीराजेन्द्रदासजी महाराज* 10
5. ***बालक अंक*** ❖ ***भक्त बालक धन्ना जाट*** 15
6. ***बालक अंक*** ❖ ***वीर बालिका मरीचि*** 16
7. ***गोमहिमा*** ❖ ***द्वाराचार्य श्रीमंहत श्रीराजेन्द्रदासजी महाराज*** *(भारतीय गोकल्याण महामहोत्सव– 2011)* 17
8. ***सुरभी शतकम् (प. श्रीरामस्वरूपजी पांडे)*** 20
9. ***श्री कृष्ण और पुजारी का संवाद*** 23
10. ***संस्था समाचार*** ❖ *गोधाम पथमेड़ा का वार्षिक समारोह धुमधाम से सन्पन्नः–* ❖ *जन्मशताब्दी महामहोत्सव श्रीब्रह्मज्योति दर्शन रथयात्रा* ❖ *श्री ब्रज चौरासी कोस गो–यात्रा फरवरी 2012 से* 26
11. ***व्रत पर्वोत्सव अंक से*** ❖ *मकर संक्रान्ति महापर्व* 27
12. ***कविता*** 30

धर्मस्य मूलं गणिता हि गावः ता एव मूलं निजसंस्कृतेश्च।
सर्वेऽपि देवा वपुषि प्रतिष्ठाः इति श्रुतौ नो भणितं हि तस्याः।।

गौओं को हमारे सनातन धर्म एवं संस्कृति का आधार माना गया है। सारे देवता इसके शरीर में विराजमान है। ऐसा वेदो में भी कहा गया है।

संस्थापक एवं प्रधान संरक्षक : गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज

Web. www.pathmedagodarshan.org
Email : k.k.p.pathmeda@gmail.com

lEikndh; irk
श्रीगोधाम महातीर्थ आनन्दवन–पथमेड़ा,
त.–सांचोर, जि.–जालोर (राज.) 343041
Ph.02979-287102-09
Tel. Fax. 02979-287122

प्रबन्ध व कार्यकारी सम्पादक
पूनम राजपुरोहित "मानवताधर्मी"
Mob.9414154706

lEiknd
स्वामी ज्ञानानन्द
eY;&10 #i;k

आजीवन सदस्यता शुल्क–1100 रुपये मात्र

राग-द्वेष पर विजय पाने के उपाय

साभारः- साधक संजिवनी

राग-द्वेषके वशीभूत होकर कर्म करनेसे राग-द्वेष पुष्ट (प्रबल) होते हैं और अशुद्ध प्रकृति- (स्वभाव) का रूप धारण कर लेते है। प्रकृति के अशुद्ध होने पर प्रकृति की अधीनता रहती है। ऐसी अशुद्ध प्रकृतिकी अधीनतासे होनेवाले कर्म मनुष्यको बाँधते हैं। अतः राग-द्वेषके वशमें होकर कोई प्रवृत्ति या निवृत्ति नहीं होनी चाहिये- यह उपाय यहाँ बताया गया। इससे पहले भगवान कह चुके हैं कि जो मेरे मतका अनुसरण करता है, वह कर्म-बन्धनसे छूट जाता है।

इसलिये राग-द्वेषकी वृत्तिके वश में न होकर भगवानके मत के अनुसार कर्म करनेसे राग-द्वेष सुगमतापूर्वक मिट जाते हैं। तात्पर्य यह कि साधक सम्पूर्ण कर्मोंको और अपनेको भी भलीभाँति भगवदर्पण कर दे और ऐसा मान ले कि कर्म मेरे लिये नहीं हैं, प्रत्युत भगवान् के लिये ही है; जिनसे कर्म होते हैं, वे शरीर, इन्द्रियाँ, मन, बुद्धि आदि भीभगवान्‌के ही हैं; और मैं भी भगवान् का ही हूँ। फिर निष्काम, निर्मम और निःसन्तान होकर कर्तव्य-कर्म करनेसे राग-द्वेष मिट जाते हैं। इस प्रकार भगवान्‌के मत अर्थात् सिद्धान्तको सामने रखकर ही किसी कार्यमें प्रवृत्त या निवृत्त होना चाहिये।

सम्पूर्ण सृष्टि प्रकृतिका कार्य है और शरीर सृष्टिका एक अंश है। जब तक शरीरके प्रति ममता रहती हैं अर्थता मनुष्य रुचि या अरुचिपूर्वक वस्तुओंका ग्रहण और त्याग करता है। यह रुचि-अरुचि ही राग-द्वेषका सूक्ष्म रूप है। राग-द्वेषपूर्वक प्रवृत्ति या निवृत्ति होनेसे राग-द्वेष पुष्ट होता हैं; परन्तु शास्त्रको सामने रखकर किसी कर्ममें प्रवृत्त या निवृत्त होनेसे राग-द्वेष मिअ जाते हैं। कारण कि शास्त्रके अनुसार चलनेसे अपनी रुचि और अरुचिकी मुख्यता नहीं रहती। यदि कोई मनुष्य शास्त्रको नहीं जानता, तो उसके लिये महर्षि वेदव्यासजी के वचन हैं-

श्रुयतां धर्मसर्वस्व श्रुत्वा चैवावधार्यताम्।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।।

हे मनुष्यों! तुमलोग धर्मका सार सुनो और सुनकर धारण करो कि जो हम अपने लिये नहीं चाहते, उसको दूसरोंके प्रति न करें।

जीवन्मुक्त महापुरूष भी शास्त्र-मर्यादाको ही आदर देते हैं। इसीलिये श्राद्धमें पिण्डदान करते समय पिताजी का हाथ प्रत्यक्ष दिखायी देनेपर भी भीष्मपितामहने शास्त्रके आज्ञानुसार कुशोंपर ही पिण्डदान किया। अतः साधकको सम्पूर्ण कर्म शास्त्रके आज्ञानुसार ही करने चाहिये।

राग-द्वेष मिटानेके इच्छुक साधकोंके लिये तो कर्म करनेमें शास्त्रप्रमाणकी आवश्यकता रहती है, पर राग-द्वेषसे सर्वथा रहित महापुरूषका अन्तःकरण इतना शुद्ध, निर्मल होता है कि उसमें स्वतः वेदोंका तात्पर्य प्रकट हो जाता है,चाहे वह पढ़ा-लिखा हो या न हो। उसके अन्तःकरणमें जो बात आती है, वह शास्त्रानुकूल ही होती है। राग-द्वेषका सर्वथा अभाव होनेके कारण उस महापुरुषके द्वारा शास्त्र निषिद्ध क्रियाएँ कभी होती ही नहीं। उसका स्वभाव स्वतः शास्त्रके अनुसार बन जाता है। यही कारण है कि ऐसे महापुरूषके आचरण और वचन दूसरे मनुष्योंके लिये आदर्श होते है।

श्री कामधेनु कृपा प्रसाद

(टेपांकित वाणी का संकलन)

(परम भागवत गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज)

.....पिछले अंक से आगे

सुरभि स्वयं ईश्वर स्वरूप है। भगवान के, परमात्मा के कई दिव्य स्वरूप है, उनमें एक आदि स्वरूप सुरभि है। पूज्य महाराजश्री का दुग्ध कल्प हो रहा था उस समय एक बड़ा ही मधुर श्री सुरभ्यै नमः, श्रीसुरभ्यै नमः संकिर्तन हुआ उस संकीर्तन में साक्षात् सुरभि के स्वरूप का एक छायांकन हुआ उसी समय हमने महाराजजी से निवेदन कर दिया था। हमने छुपाया नहीं छुपाने के लिये हमारे पास कुछ है ही नहीं। सुरभि का स्वरूप शास्त्रों वर्णित है, वेदों में वर्णित है। जो गोओं की अधिष्ठात्री शक्ति है उनको सुरभि गोमाता कहा जाता है। वह अधिष्ठात्री शक्ति इतनी विभु है, सबको समाहित और आच्छादित करके उपस्थिति है एक, और दूसरा उनका एक चिन्यम स्वरूप है जिसके अन्दर गोलोक बना वह केवल गोलोक ही है यह दो। दूसरा हम जो देख रहे हैं यहाँ गोमाता अभी पधार गई गोष्ठ में ये तीनों उसी के स्वरूप हैं। केवल गोलोक जहाँ है और कुछ नहीं सुरभि है। दूसरा अष्ठधा प्रकृति जो सबको आच्छादित करती है यही सुरभि है उनका स्वरूप जिनको हम प्रत्यक्ष देखते है। इसलिये भगवान ने ऐसा अवसर दिया, महाराजजी बता रहे थे कि संतों में चर्चा हो रही है कि इस अनुष्ठान में अधिकारी लोगों को साक्षात् भगवान के दर्शन होंगे, ऐसी बात है। अधिकारी कौन है परमात्मा ही जाने! पर ऐसी बात है। ऐसा यह दिव्य और अनुपम अनुष्ठान पूरे देशवासी इनका लाभ लें। यह अलगे १३ दिनों तक और चलेगा। कार्तिक पूर्णिमाको सम्पन्न होगा। इस अनुष्ठानका नाम ''भारतीय गोकल्याण महामहोत्सव-२०११'' है। वैसे तो पृथ्वी पर जितनी गायें हैं वे सब गायें ही है, पर भारतीय का अर्थ इसलिए भारतीय शब्द लगाया है कि भारत में गाय की पहचान थी अभी तक थी और दूसरे देशों में गाय को पहचानते ही नहीं थे। जब कि गोमाता मिश्र से लेकर अफ्रिका तक यह बीच का जो भूभाग है यहाँ सभी जगह गो है जिसके कुकुंद और गलकम्बल है। वहाँ कभी परिचय था फिर सभ्यताएँ नष्ट हो गई तो गाय का परिचय भूल गये और फिर नये सिरे से लोग अब जानकारी प्राप्त कर रहे हैं। इस लिए इस गोकल्याण के आगे भारतीय शब्द लगाया गया है। कुकुंद और गलकम्बल वाली गोमाता पृथ्वी पर कहीं पर भी हो वह भारतीय गोमाता ही है, वो गो ही है। उसके अतिरिक्त जितने भी पशु है दूध देने वाले उनमें से कुछ पशु ऐसे हो सकते है जो गाय जैसे दिखते हो और कुछ पशु ऐसे भी हो सकते है जो असुरों ने लालच वस गाय के साथ उसका समिश्रण करके संकर बना दिया हो। पर वो गाय नहीं है। वह तो बहुत ही नीचा पशु है जो संकर बना हुआ है व तो भैंस से भी नीचा है। भैंस, गाय और संकर पशु उनका अगर देखने जाये तो भैंस को तो आदिती की सन्तान मान सकते है। दीति और आदिती दोनों बहिने थी तो वो ऐसा हो सकता है पर जो तिसरा है उसको क्या कहोंगे संकर और संकर क्या करता है बोले नरक में ले जाता है, पतन करता है, अधोगति करता है। असाध्य रोग शारीरिक, मानसिक

और बौद्धिक रोगों के उत्पन्न होने के पीछे कारण यह सारा संकरीकरण है चाहे वो पशुओं में हो, अनाज में हो, औषधियों में हो, फलों में हो इन सबमें जो संकरीकरण है, यह अनेक प्रकार के शारीरिक, बौद्धिक और मानसिक रोगों का कारण है। इस कारण समाज इसको समझे। स्वास्थ्य की दृष्टि से! आने वाले भविष्य के लिये मानव जाति को समझना है। समझना और अन्दर उतारना इसके लिये ही सुरभि माँ ने हमें यह गोनवरात्रि और सुरभि महामन्त्र के अनुष्ठान एवं ऐसे दिव्य यज्ञ के दर्शन और सृजन में निमित बनाया है। हम में से बहुत सारे लोग यहाँ हैं वो और बाहर हैं वो सभी कार्यकर्त्ता इस अनुष्ठान में किसी न किसी तरह सृजन में निमित बन रहे हैं और दर्शक सभी हैं ही जिनको आंखे दी हैं भगवानने, न देखे वो अलग बात है। पूरे देश के लिये यह दृश्य खुला कर दिया है पूरी दुनिया के लिये सारी दुनिया इस दृश्य को देखे और कुछ प्रेरणा ले। इसी अपेक्षा के साथ हम पूज्य महाराजश्री से निवेदन करेंगे कि वे सुरभि अनुष्ठान का महत्व और गोनवरात्रि की महत्ता इन दोनों विषयों पर हम सभी गोभक्त, साधकों, सुरभि उपासकों का मार्गदर्शन करेंगे और पूरी दुनिया में लोग सभी गोमहिमा को उनके श्रीमुख से श्रवण करें। ये मलूकपीठ वृन्दावन के आचार्य हैं जगत्गुरू द्वाराचार्य श्रीराजेन्द्रदेवाचार्यजी महाराज वेद पुराण और संत वाणी, आचार्यवाणी संक्षिप्त में कहे तो वेदवाणी, गुरुवाणी और आचार्य वाणी के चलते-फिरते ''लाईबरेरी'' है। यह गोमाता की कृपा से ही ऐसा महान पुस्तकालय हमको प्राप्त हुआ है। जिनमें वेदवाणी भी है, गुरुवाणी और आचार्य वाणी भी है, बस इन तीन वाणियों पर ही विश्वास किया जा सकता है पृथ्वी पर। तीनों में से किसी एक पर चलने से भी जीवों का कल्याण हो जाता है। ऐसा कोई आस्तिक इन तीनों में से एक जुड़े न तो उसे आस्तिक कहा ही नहीं जा सकता। आस्था संतवाणी, गुरुवाणी और वेदवाणी के आधार पर ही बनती है इसलिये सभी प्राणी उस आधार पर वेद, गुरु और संतवाणी के प्रकाश में गोमहिमा का श्रवण करें। पूज्य महाराजश्री से आग्रह है कि वे सभी को प्रसाद वितरित करें अपनी दिव्य वाणी का, गोमहिमा का। जय गोमाता, जय गोपाल।

त्वं माता सर्वदेवानां त्वं च यज्ञस्य कारणम्। त्वं तीर्थं सर्वतीर्थानां नमस्तेऽस्तु सदानघे।।

वन्दे धेनुमातरम्, वन्दे धेनुमातरम्, वन्दे धेनुमातरम्, वन्दे धेनुमातरम्। गोमाता की जय, गोपालकृष्ण भगवान की जय, सत्य सनातन धर्म की जय।

सर्वेश्वर सच्चिदानन्द भगवान गोपालकृष्ण अन्तर्यामी रूप से हम सभी के हृदय में विराज मान है। उनका पावन स्मरण करते हैं पूज्या गोमाता तथा उसके अखिल गोवंश के चरणों में वन्दना करते हैं। पूज्यव्यासजी, उपस्थित संत, साधक, गोवत्स, गोभक्ति अतिथि, माताओं, बहिनों, बालकों आप सभी को सादर हरिस्मरण। जय गोमाता जय गोपाल।

कल हम लोगों ने संस्कार पर चर्चा की थी। मनुष्य के अन्दर मानवता का निर्माण करने का प्रथम आधार है संस्कार। पांच सोपान हैं। मतलब प्रथम सोपान संस्कार है और वो संस्कार जिस समय यह आत्मा मातृ गर्भ में आती है उससे पहले से ही प्रारम्भ हो जाते हैं और उन सभी प्रकार के संस्कारों, गर्भाधान से लेकर अन्तिम संस्कार का आधार

पंचगव्य और पंचामृत हैं। जिस पर हम लोगों ने चर्चा की थी। अभी पूज्यव्यासजी कह रहे थे कि भगवान की कितनी अहैतुकी कृपा है कि हमें गो का सान्निध्य प्राप्त हुआ। वैसे तो गाय के सान्निध्य में बहुत सारे लोग रहते हैं। गोपालक रहते हैं, ग्वाल-बाल होते हैं या जो गो जिनके जीवन निर्वाह का आधार हैं, ऐसे लोग भी गाय के साथ चौबिसों घण्टे व्यतित करते हैं। इतना होने पर भी उनमें से बहुत सारे लोगों को गोमाता के सान्निध्य की जो अनुभूति है वो नहीं हो पाती। जो लाभ मिलना चाहिये वो नहीं मिल पाता। उसका कारण यही है कि वे गोमाता के स्वरूप को जानते नहीं हैं। नाम को जानते हैं पर स्वरूप को नहीं जानते। स्वरूप को न जानने के कारण उसके साथ रहने पर भी उनकी महत्ता नहीं समझते।

स्वरूप की अज्ञता और महत्ता को न समझने के कारण पूज्या गोमाता का उनके द्वारा अपमान भी होता है, तिरस्कार भी होता है और कई बार तो ऐसा भी देखा गया कि जो गोवत्स हो बछड़े उन बछड़ों के भाग का दूध भी गोपालक दोह लेता है। तो कल जैसे बताया था कि गोमाता तो माँ है और उनके अन्दर सदा सबके प्रति वात्सल्य है। उनको कितनी ही पीड़ा दे उनके पुत्र, फिर भी वो अपने पुत्रों का कभी अहित नहीं चाहती। पर गोमाता के दिव्य शरीर में निवास करने वाले दैवी शक्तियाँ इस तरह के व्यवहार से कुपित हो जाती हैं और उन्हें श्राप मिलता है तो वे गोसेवा के लाभ से तो वंचित रहते ही हैं साथ और पाप के भागीदार बन जाते हैं। हम लोग गोमाता के स्वरूप को और उनकी महत्ता को संतवाणी या शास्त्र से सुनकर उनके पास में, उनका सान्निध्य प्राप्त करें। हमें हमारे अन्दर इस बात को गहराई तक बैठा देना है कि गाय कोई सामान्य प्राणी नहीं है, गाय कोई लौकिक प्राणी नहीं है, गाय कोई प्राकृत तत्वों से और गुणों निर्मित प्राणी नहीं है। यह सारी बातें हमने सत्संग के माध्यम से सुनी हैं। गाय अलौकिक है, प्रकृति के गुणों और तत्वों से अतीत है। गाय का सम्बन्ध पृथ्वी पर रहते हुए भी नित्य गोलोक से रहता है। गोलोक से नित्य सम्बन्ध बना रहता है।

तो गाय के निकट जाने का भाव, हृदय से निकट जाने का अर्थ गोलोक के पथ पर चलना है। गाय एक ऐसा मार्ग है, जैसे किसी शहर में जाने के लिए कोई सड़क मार्ग या रेल मार्ग, हवाई मार्ग होता है ऐसे ही गोलोक में जाने का यह हवाई मार्ग है। गो के अन्दर जो गो किरणें आती हैं सूर्य से, गो के उस आरा में, आभा मंडल में जाने से उस किरण से हमारा, हमारी चेतना का सम्पर्क हो जाता है भावपूर्ण जाने से और जिस तरह से गो का सम्बन्ध गोलोक से निरन्तर रहता है ऐसे ही गो के सान्निध्य में रहने से हमारी चेतना का सम्बन्ध भी गोलोक से जुड़ जाता है। गोलोक से जुड़ने के बाद तो क्या कृपा बरसती है वो तो स्वयं गोवत्स उसका अनुभव करें। पर हाँ जिसे सच्चिदानन्द कहते हैं, जिसे शान्ति, प्रकाश और आनन्द कहते हैं वह गोमाता के सान्निध्य में, उनकी शरण में भावपूर्वक, समझपूर्वक सोचने से उनकी अनुभूति होती है। बिना समझे तो ''करत लगत ते परि पहचाने'' हाथ में है रूप जाने बिना, नाम जाने बिना कोई चीज हमारे हाथ में आ गई पर यह क्या है पता ही नहीं। तो गाय है गाय के उस केवल नाम को जाना है उसका जो वास्तविक स्वरूप है उसको हमने नहीं जाना। गाय का नाम इस दृष्टि से जाना है कि दूध देने वाला प्राणी है, इससे बैल मिलता है, इससे

यह मिलता है उससे अधिक हमने गो के नाम को नहीं समझा।

व्यासजी कल उच्चारण करवा रहे थे गो के नाम का। वास्तव में जो प्रणव है ओमकार, उनका और गो शब्द का अभिन्न सम्बन्ध है बहुत कम व्याकरणविद् लोग इसको देखें तो बहुत कम अन्तर है। उच्चारण करने में बहुत कम, केवल जहाँ ओ है वहाँ गो है तो थोड़ा सा गो और ओ थोड़ा सा अन्तर है। बाकि आगे की तो सब चीज एक ही है। ओम् में हम म कहते हैं पीछे और उसमें म नहीं है। म कहने से एक सीमा आ जाती है ओ..म यहाँ पर हो गया पर म पीछे नहीं आवे तो गो असीम हो जाता है। हम यह निवेदन कर रहे थे कि उस गो का जो भाव है, अर्थ है, मतलब है, भावार्थ है, तत्वार्थ है उसको समझे बिना केवल गाय दूध देने वाला प्राणी, गाय गोमूत्र-गोबर देना वाला प्राणी, बैल देने वाला प्राणी मतलब मानव उपयोगी यानि जीवन निर्वाह के लिये जो गाय का उपयोग है इतनी जानकारी है, ऐसा गाय का सम्बन्ध है वो गाय का सम्मान नहीं कर पाते। गो के आशीर्वाद या गो की कृपा को आत्मसात् नहीं कर पाते।

हम लोग कल कह रहे थे कि आज संस्कार पर चर्चा की, कल हम स्वास्थ्य पर चर्चा करेंगे। आरोग्य पर। संस्कार पर चर्चा हुई कि उन संस्कारों से मनुष्य का स्वभाव बनता है और स्वभाव के अनुरूप मनुष्य आहार-विहार करता है इसलिये हमने पहले संस्कार की चर्चा की। आहार-विहार पर आरोग्य निर्भर है। अगर हमारा आहार, जैसा कल कहा गया था कि उस तरह का शुद्ध सात्विक आहार ले। श्वास लेना भी नहीं आता कैसे ली जाये? पहले पशु योनियों से आये हैं इसलिये जिस तरह से पशु श्वास लेते हैं, वैसे श्वास लेते हैं असावधानी पूर्वक। श्वास लेना नहीं आता, कुल्ला करना नहीं आता और 'वैद्यजी वहाँ बैठे है सारी बातें करेंगे उत्तम जी, सौच जाना नहीं आता, भोजन करना नहीं आता। यहाँ से इनकी शुरूआत होती है कि श्वास कैसे लेनी है? श्वास में एक लय होती है। अपने लेते हैं और छोड़ते हैं। दोनों समान होती चाहिए। ले दिया जोर से और छोड़ा कम अथवा थोड़ा जोर लिया और छोड़ा कम जो प्राण शक्ति का ह्रास होता है, उसका प्रभाव मन पर भी पड़ेगा, बुद्धि पर भी पड़ेगा और अपनी कार्य क्षमता पर भी पड़ेगा। इसलिये हमारे संतों ने भगवान को श्वास के साथ जोड़ दिया। भगवान का सांय-सुबह श्वास के साथ जप करने से एक श्वास लेने का व्यवस्थिति अभ्यास हो जाये, बाकि तो ध्यान ही नहीं रहता कि श्वास आ रही है कि जार रही है। जब श्वास रूकती है तब पता लगता है उसके पहले गयी या आयी, होश ही नहीं रहता। अगर आदमी दिन में होशपूर्वक जीये तो उनके द्वारा सारे कार्य सुचारू रूप से संपादित होंगे। अगर थोड़ी-थोड़ी देर में हमारा ध्यान श्वासों पर चला जाये, भगवान नाम के साथ में तो उनके द्वारा सम्पादित, चाहे वो भोजन हो, स्नान हो, व्यवसाय हो, चाहे कृषि हो, प्रवचन हो, लेक्चर हो या जो भी हो तो सारे कार्य सुव्यवस्थित सम्पादित होंगे। उनमें कहीं कमी नहीं रहेगी।

जैसे कल अपनी बात हुई थी कि हम काम तो कुछ और कर रहे होते हैं और होता कुछ और है। बैठना कैसे चाहिए, बोलना कैसे चाहिए, सुनना कैसे चाहिए सारी चीजें व्यवहार की हैं और ये हमारे शास्त्रों में सारी लिखी हुई हैं। संत हमारे, पूज्य व्यासगण वे सब उनकी व्याख्या करते ही हैं। यह अलग बात है कि

आजकल व्यास लोग भी उनमें से थोड़ा-थोड़ा ले लेते हैं और उसी पर अपना प्रवचन दे देते हैं। उनमें ऐसा कोई विषय नहीं है आहार-विहार, संस्कार आदि से सम्बन्धित जो ऋषियों ने छोड़ा हो। सब बातें मौजूद हैं। कोई नई बाते हम लोग कहीं से लाते नहीं, सब हैं पर हमको समय नहीं उनके अध्ययन का और हमको सुनाने वाले को समय नहीं है पूरा सुनाने का। हमको स्वयं को सुनने का समय नहीं और उनको सुनाने का समय नहीं। भागवतजी ढ़ंग से सुनाने जाओ तो पता नहीं कितने दिन हो जाये। लेकर तो भागवतजी रखते हैं, पर भागवतजी के अमूक-अमूक व्याख्यानों को सुनाकर पूरा कर देते हैं। हमको पहले पता ही नहीं था, हम सोचते थे कि भाई सप्ताह भर में भागवत कैसे सुनाते होंगे, यह तो बाद में पता लगा कि प्रसंगों के आधार पर यह पूरा वक्तव्य दो-तीन घण्टे में हो जाता है।

तो ऐसा करने से वहाँ से हमें पूरी जानकारी नहीं मिलती। पहले हमारे विद्यालयों में, गुरुकुलों में हमको धर्मशास्त्र पढ़ाए जाते थे। हमारे धर्मशास्त्र एक तरह से जीवन शास्त्र हैं। जीवन जीने की क्या पद्धति है वो धर्म शास्त्रों से हमें मिलती है। तो जीवन जीने की कला, जीवन जीने की शिक्षा, जीवन जीने की विद्या पहले हमें हमारे गुरुकुलों से, हमारे विद्यालयों से मिलती थी। आज तो हमारे विद्यालयों से केवल तकनीकी और भाषायी शिक्षा मिलती है और कोई शिक्षा मिलती ही नहीं। तकनीकी शिक्षा मिलती है और भाषायी शिक्षा मिलती है। भाषायी शिक्षा में भी अब तो सब अंग्रेजी पर जोर दिया जा रहा है, संस्कृत तो शायद है ही नहीं। अन्य-अन्य भाषाएँ और तकनिकी विषय जैसे गणित, विज्ञान आदि। यह अधूरी शिक्षा है। आप इसको अन्यथा नहीं लेंगे पर इस शिक्षा को अधूरी शिक्षा कहते हैं। यह केवल अलग-अलग भाषाओं में अलग-अलग लोगों से बात करने के लिये उपयोगी है। जिससे कहीं जाने-आने के लिये, बोलने के लिये, लोगों से सम्पर्क करने के लिये, संवाद स्थापित करने के लिये, उनको समझने के लिये, अपने को समझाने के लिये उपयोगी है, पर हम कैसे रहें, कैसे जीयें, यह शिक्षा क्या मिलती है? घर में भी मिले नहीं और विद्यालय में भी न मिले तो कहाँ मिलेगी? अब वो एक ही स्थान रहा है सत्संग। सत्संग में भी अगर यह लोभ करने लग जायें कि बहुत विषय सुनायेंगे तो लोग खड़े होकर चले जायेंगे या समय खूब हो जायेगा, सुनने वाले कहे कि इतनी देर तो नहीं सुन सकते हमें काम-काज है, तो आजकल बहुत सारे ग्रन्थों को हिन्दी में भी अनुवाद हो गया है आप उन्हें पढ़कर बहुत कुछ प्राप्त कर सकते हैं। हमारे अधिकतर धार्मिक ग्रन्थों का हिन्दी व अन्य कई भाषाओं में गीताप्रेस गोरखपुर द्वारा अनुवाद और उनका सस्ते मूल्यों पर प्रकाशन किया है। गीता, भागवत, रामायण, महाभारत, संक्षिप्त में पुराण, महापुराण आदि सब निकले हैं, हम उन्हें पढ़ सकते हैं। कुछ ग्रन्थों का अंग्रेजी अनुवाद भी हुआ है। जो हिन्दी नहीं पढ़ सकता हो वो अग्रेजी में लिखे ग्रन्थ पढ़े। श्रद्धेय स्वामी श्री रामसुखदासजी महाराज की गीता पर लिखी गई टीका साधक संजीवनी का भी अग्रेजी में अनुवाद हुआ है। तो इस तरह से जो हिन्दी भी नहीं जानते हो वे अग्रेजी अन्य भारतीय भाषा में पढ़ सकते हैं। हमको लगा कि सत्संग का और सत्पुरुषों के सान्निध्य का सुवसर लम्बे समय तक प्राप्त नहीं होता। इसलिये हमको धर्म शास्त्रों का संग्रहण करना चाहिए। .....शेष अगले अंक में

श्री गोभागवत कथा

कथा व्यास

परम पूज्य द्वाराचार्य महंत श्रीराजेन्द्रदासजी महाराज

..... पिछले अंक से आग

हमारे ज्ञान की कोई नकल न करें इसके लिये ऐसा एक विशेष प्रभाव भगवान ने इस लीला के माध्यम से दिखाया। किन्तु धन्य है गौमाता जिसके गोमय और जिसके गोमूत्र से वेद, पुराण, शास्त्र, इतिहास, धर्मग्रंथ और चरक, सुश्रुत, आर्यभट्ट जो हमारे भारतीय आयुर्वेद के प्रणेता ऋषि है उनके ग्रंथ गोमय और गोमूत्र की महिमा से भरे पड़े हैं। तो जिसके मल और मूत्र में सात्विकता हो, जिसके गोमय और गोमूत्र में ऐसी सात्विकता हो उसका व्यवहार करने से रज और तम की निवृत्ती हो जाये, पापकी, पाखण्ड की निवृत्ती हो जाये उस गाय की कितनी महिमा है। कौन वर्णन करे उसका, गाय का। इतनी महिमा है गौमाता की। श्रीविशुद्धानन्दजी पुरी से आये थे हमारे साथ यहाँ कथा में थे तो यहाँ के गाय के गोबर से लिपे हुए भवनों को देख कर इतने प्रसन्न हुए, बहुत अधिक प्रसन्न हुए और स्वाभाविक जो भी आता है तो गाय के गोबर से लिपे हुए कुटिया भवन इनको देखता है उसके चित्त में सत्विकता का संचार हो जाता है क्योंकी वह सात्विकता गाय के गोबर, गोमूत्र में पहले से निहीत है।

इसलिये उसका दर्शन करके हम एक सात्विकता का अनुभव करते हैं। इसलिये यदि हम इस उग्रवाद, आतंकवाद, अशान्ति, लूट-खासौट, चोरी, डकैती आदि को जड़ से मिटाना चाहते हैं तो हम सभी वर्ग के सभी मनुष्योंको, नर-नारियों को गोमाता से जोड़ दे, गोसेवा से जोड़ दे, गोरक्षा के पवित्र कार्य से जोड़ दे तो इस धरती पर कहीं भी अशान्ति नहीं रहेगी। यह बात है कि सही बात भी समझ में कम आ पाती है। यह भी दुर्भाग्य है और बातें लोगों के समझ में आयेगी लेकिन यह जो, जिसको स्वीकार करने से सारी समस्याओं का समाधान हो जायेगा वो बात जल्दी लोगों के समझ में नहीं आती। हम तो प्रार्थना करते हैं भैय्या कि समय के रहते हुए समझलो तो आगे के महाविनाश से बचा जा सकेगा और समय के रहते हुए हम समझ नहीं सके तो फिर आगे पश्चाताप ही हमारे हाथ लगेगा। **''आछे दिन पाछे गये, किया न गुरु सन हेत, अब पछताये होत का जब चिडियाँ चुग गयी खेत। का बरखा जब कृषि सुखाने, समय चुके पुनि का पछीताने।।''** अरे! खेती सुख जाये और उस में पानी बरसे तो उस पानी से क्या लाभ। अवसर चूकने के बाद केवल पश्चाताप ही पश्चाताप शेष रहेगा।

इसलिये इस पवित्र कार्य में सबको जुट जाना चाहिए। हम बार-बार यही निवेदन कर रहे थे कि यह हमको कहने का कल भी मन था लेकिन कल नहीं कह सके। सनातन धर्म का स्वरूप क्या है? **''कृतेच प्रति कर्तव्यम् ऐश धर्म सनातनः''** जो हमारे साथ उपकार करे उस उपकारी की सेवा करके उसके प्रति कृतज्ञ रहना यही सनातन धर्म है। माता-पिता हमारे बड़े शिक्षक, आचार्य, गुरुजन इन सबने हमारे ऊपर कृपा की है, इनकी सेवा करना, इनके प्रति कृतज्ञ रहना, सनातन धर्म है। देवऋण, ऋषिऋण, पितृऋण से मुक्त होना इनका यथा समय पूजन-अर्चन, तर्पण करना आदि करके यह सनातन धर्म है। भगवान की भक्ति करना, भगवान के प्रति कृतज्ञ रहना

सनातन धर्म है और सृष्टी में गाय के जैसा उपकार, गाय के जैसा हित अन्य किसी प्राणी ने आज तक नहीं किया है। इसलिये गाय के प्रति कृतज्ञ रहना, गाय की सेवा करना, गोसंवर्धन-गोपालन करना यह सनतान धर्म है। इसलिये इसका पूरा सार हमारी समझ में यही आया **''कृतेच प्रति कर्तव्यम् ऐश धर्मः सनातनः''** गाय समग्र विश्व की रक्षिका है, जननी है, पालिका है, पोषिका है इसलिये गाय के प्रति कृतज्ञ रहना, गाय की सेवा करना इसीका नाम है सनातन धर्म और इसीका नाम है मानव धर्म। बोलो भक्तवत्सल भगवान की जय।

पुराणों में महाराज ! गाय के इतने इतने प्रसंग आते हैं, अभी तो अवसर नहीं है। भगवान से प्रार्थना है, गोमाता के चरणों में प्रार्थना है कि हम जैसा चाहते हैं वैसा शास्त्रीय शैली से एक ग्रंथ तैयार हो। गाय के सम्बन्ध में फिर शास्त्रीय ढ़ंग से गाय की चर्चा की जाये। केवल उसी ग्रंथ के माध्यम से गाय की चर्चा की जाय। ऐसी भगवान से प्रार्थना है। भगवान इस सत् संकल्प को पूर्ण करें। उपपुराणों में देवी पुराण का नाम आता है। अष्टादश पुराणों में तो नहीं आता पर उपपुराणों में देवी पुराणका नाम आता है। इस देवी पुराण में गौमाता की उत्पत्ति की बड़ी सुन्दर कथा हमको पढ़ने को मिली और पढ़ करके बड़ा आनन्द मिला। बहुत सुन्दर कथा पढ़ने को मिली। बोले नित्य श्री गोलोक धाम में जो त्रिपाद् बिहुती गिरजा के इस पर नित्य गोलोक धाम भगवान का अवस्थित है उस नित्य दिव्य गोलोकधाम में एक एक सुन्दर वन वृन्दावन जो युगल सरकार श्यामाश्याम की नित्य विहार स्थली है, उस विहार स्थली में राधा-कृष्णने जाने का संकल्प किया। देवी पुराण में लिखा है **''एकदा राधिका नाथो राधया सह कोतुकी, गोपांगना परिव्रताः पुण्यम् वृन्दावनम् ययो''** अपने नित्य गोलोकधाम से अनन्त सहचरियों के सहित नित्य गोलोकेश्वरी, रासेश्वरी श्रीकृष्ण प्राणवल्लभा श्री राधारानी के सहित श्यामसुन्दर श्रीवृन्दावन में पधारे और वृन्दावन में पहुँच करके वहाँ श्रीठाकुरजी का महारास हुआ। यह महाराजजी नित्य गोलोक के चरित्र का वर्णन है। वहाँ रास हुआ, रास में अतिसुकोमल श्री कुन्ज बिहारीजी कुछ थोड़े शान्त हो गये लाड़लीजी और सुकोमुलाएँ वे भी शान्त हो गई। युगल को कुछ शान्त देखकर सहचरियों ने वाद्य बजाना बंद किया और युगल से प्रार्थना की कि आप तनिक विश्राम करें। क्रिडा को विराम दे रासक्रिड़ा को और विश्राम करें। अब ठाकुरजी और श्रीजी को कुछ भोग लगाने की इच्छा हुई पर और भोग तो यहाँ क्या उपलब्ध है, परस्पर युगल एक दूसरे के रूप का भोग करने लगे। श्रीश्यामाजी अपने अपलक नेत्रों से श्यामसुन्दर के रूप माधुरी का उपभोग कर रही थी, दर्शन कर रही थी रूप सुधा का पान कर रही थी और श्यामसुन्दर अपने नेत्रोंसे राधारानी के रूप सुधा का पान कर रहे थे। तात्पर्य है कि युगल सरकार श्यामाश्याम एक दूसरे को बड़े लाड़-चाव से, प्यार से निहार रहे थे। परस्पर दो चकोर, दो चंदा इस भाव से परस्पर निहार रहे थे। तो उन युगल में वह परस्पर जो श्यामाश्याम की अवलोकन थी उस युगल की अवलोकन से एक ऐसा अद्भुत प्रेम प्रकट हुआ वो प्रेम समाहित नहीं हो पाया। माने श्यामसुन्दर और राधारानी दोनों उस प्रेम को बटोरने में समर्थ नहीं रह पाये। वो इतना प्रेम जागृत हुआ, इतना प्रेम जागृत हुआ कि वह प्रेम पूंजीभूत हो गया, एकत्रित हो गया। युगल का प्रेम जैसे ही पूंजीभूत हुआ वहाँ एक

बछ़डे के सहित गाय प्रकट हुई। देवी पुराण में लिखा है। इसका मतलब है राधा-कृष्ण के जो हृदय का प्रेम है उस प्रेम का नाम है सवत्सा गाय। लिखा है, कहते हैं **''स श्रजे सुरभिम् देवीम् लीलया दामपाश्रवता वत्सयुक्ता दुग्धावतीम् वत्सोनाम् मनोरथः''** कहते हैं कि सुरभि देवी प्रकट हो गयी भगवान के वाम पार्श्व से। ठाकुरजीके वामांग में श्रीजी खड़ी है। युगल का प्रेमपुंज प्रकट हुआ और वाम पार्श्वसे श्री सुरभि देवी प्रकट हो गई और एक बछ़डा प्रकट हुआ। इस बछ़डे का नाम क्या हुआ, मनोरथ। देवीपुराण में लिखा है कि इस बछ़डे का नाम मनोरथ हुआ। मनोरथ नाम का बछ़डा प्रकट हुआ। गाय का नाम सुरभि रखा गया और बछ़डे का नाम मनोरथ रखा गया। क्यों? बोले क्योंकि सखियों का मनोरथ था कि युगल को विश्राम मिले और युगल को कुछ भोग लगाया जाये। ठाकुर का और श्रीजी का भी मनोरथ था। श्रीजी का मनोरथ था हम ठाकुरजी को कुछ खिलायें-पिलायें, ठाकुरजी का मनोरथ था हम श्रीजी को कुछ भोग लगायें।

तो सबके मनोरथ की पूर्ति हुई। बछ़डा प्रेमसे गौ का दूध पीने लगा। गाय के थनोंसे दूध झरने लग गया, उस समय भगवान के प्राण सखा श्रीदामा गोपने स्वर्ण की दोहनी हाथ में लेकर दूध दोहा। अब उसको धारोक्षनी दूध कहते हैं, तुरंत का काढ़ा हुआ दूध ! यह दूध दुहा और दोह करके युगल सरकार के हाथ में दूध दे दिया। महाराजजी अकेले नहीं एक साथ उस दुग्ध भांड को मुख लगाके दोनों दूध पीने लगे। ताजा-ताजा दूध और दूध पीते, पीते, पीते ठाकुरजी की रास की सारी थकान दूर हो गयी। सद्बालकपरोकः, चाहे जैसी थकान हो आपको धारोक्षण दूध मिल जाये पीने को तो थकान रहेगी ही नहीं, सारी थकान दूर हो जायेगी। दूध पीते-पीते ठाकुरजी बहुत पी गये। लीला है ठाकुरजी की कि वो ऐसा अक्षय दूध का भण्डार कि ठाकुरजी, श्रीजी पीते चले जा रहे हैं और दूध कम नहीं हो रहा है। अक्षय दुग्ध का भाण्ड, वो अक्षय दुग्ध का भाण्ड ठाकुरजी के हाथ से छिटक गया, गिर गया और जैसे ही भाण्ड गिरा और फूटा तो वह दूध बहने लग गया। कितना बहा? बोले उस गोलोक में जब यह दुग्ध का भाण्ड भगवान् के हाथ से गिरा तो वहाँ त्रिपाद बिहुती आकाश से भगवान् के हाथ से दुध का भाण्ड गिरा इस भूमण्डल में जहाँ वर्तमान में क्षीरसागर है। यहाँ वो दुग्ध का भाण्ड गिरा और गिरते ही एक विशाल सागर बन गया उस भाण्ड के गिरने से और उस भाण्ड में स्थित दूध क्षीरसमुद्र के रूप में प्रगट हो गया।

भगवान् कहाँ रहते हैं? **''करउसू मम् उर धाम सदा क्षीरसागर शयन''** भगवान् क्षीरसागर में विश्राम करते हैं। आज भी भगवान् वहीं शेषनाग की शैया बिछाकर भगवान् पौढ़ गये। नाग देवता को लोग दूध पीलाते हैं कि नहीं? तो ठाकुरजी ने सोचा हमारे हमारी शैया और हमारे प्रिय पार्षद भगवान शेष हैं इनको दूध की पर्याप्त व्यवस्था कर दें। भगवान ने कहा तुम चिन्ता मत करो दूध के समुद्र में ही तुमको आसन लगा देते हैं हम पौढ़े रहेंगे। हमको भी जब भूख-प्यास लगेगी तो हम भी गो दुग्ध ही पायेंगे और तुम भी दुग्ध का पान करो, मौज करो, आनन्द लो भगवन्!

इसलिए लिखा है महान समुद्र प्रगट हो गया और उस समय गौमाता के रोम-रोम से, रोम-रोम से गायें की गायें प्रकट हो गई। पहले तो एक ही गाय प्रकट हुई थी। रोम-रोम से गोवंश प्रकट हुआ इतनी अधिक संख्या में

गोवंश प्रकट हुआ कि पहले उस धाम को त्रिपाद बिहुती धाम कहा जाता था। किंतु उस धाम में गौ प्रकट हुई और पूरा भगवान का दिव्य त्रिपाद बिहुती गोलोक भगवान का धाम असंख्य गायों से परिपूर्ण हो गया। ठाकुरजी प्रसन्न हो गए बोले! आज से हमारे इस प्यारे लोक का नाम गोलोक होगा। बोलो श्री गोलोकधाम की जय!

इसका मतलब है जहाँ गायें ही गायें हो वो कौनसा लोक है? गोलोक। हम लोग कहाँ बैठे हैं? हम पथमेड़ा गोधाम गोलोक में बैठे हैं। इस धरती के गोलोक में हम बैठे हैं। जब हम गायों के बीच में बैठते हैं तब मानो हम गोलोक धाम में बैठते हैं और महाराजजी उस प्रकरण में देवीपुराण के उस प्रकरण में दीपावली के दूसरे दिन सवत्सा गाय के पूजन की बात कही गई है। इसी दिन गाय का प्राकट्य हुआ गोलोक में। इसलिए दिवाली के दूसरे दिन सवत्सा गाय का पूजन करना आज भी भारत वर्ष में बछडे के सहेत गाय के पूजन की परम्परा प्रसिद्ध है। दीपावली के दूसरे दिन गाय की पूजा करनी चाहिए। तब से उधर बुन्देलखण्ड में गोधनबाबा की पूजा होती है और गायों को दिवाली को स्नान कराया जाता है उनका सुन्दर शृंगार कराया जाता है। उधर बुन्देलखण्ड की गोसेवा में और दूसरे दिन बड़े उत्साह से गायों का पूजन करते हैं। दिवाली को गाय दोहते नहीं है, दूसरे दिन भी नहीं दोहते हैं। ठाकुरजी के पूजन के लिए थोड़ासा ले लिया बाकि बछड़ा खूब झींक के पिये। खूब शृंगार किया जाता है। महाराज कहाँ तक कहें गाय को हांकते नहीं, मोर के पंख हाथ में लिए जाते हैं। इसका मतलब गाय को हांकना भी होगा तो मोर के पंख से हांका जाएगा। गाय को पीड़ा न पहुँचे। पवित्र भारत वर्ष है पर बात आ गई इसलिए हम कह रहे हैं। भारत वर्ष में सभी जगह गाय की दुर्दशा है लेकिन बुन्देलखण्ड जो गायों की संख्या की दृष्टी से सबसे अधिक समृद्ध था किसी समय आज सर्वाधिक दुर्दशा गाय की बुन्देलखण्ड क्षेत्र में है। गायों की निकाशी बहुत बड़ी संख्या में उस क्षेत्र से हो रही है। एक बार प्रयत्न किया हम लोग यही थे तो तीन दिन में अडतीसौ गाय बचाई गई कसाईयों से छिनी गई। बहुत दुःखद स्थिति है क्षेत्र में बड़ी गरीबी है और हम तो समझते है उस गरीबी का भी मूल कारण यही है। किसान के गाय से उसके घर से गाय चली गई यही उसकी दरिद्रता का कारण है। **'गोमय वसते लक्ष्मी'** और देवीपुराण में मंत्र भी लिखा है कि गाय की पुजा करे किस मंत्र से मंत्र भी लिखा है बोले **''ॐ सुरभ्ये नमः''** द्विजाति यज्ञोपवित धारी प्रणवयुक्त इस षड अक्षर मंत्र से गाय का पूजन करें और जो यज्ञ सुत्रधारी नहीं है वो लोग **''सुरभ्ये नमः''** इस पंचाक्षर मंत्र से पुजा करें ये विधान है। क्योंके प्रणव का उच्चारण द्विजाति को ही करना चाहिए। अब तो माईक पर हल्ला मचाया जा रहा है लेकिन शास्त्र की मर्यादा के अनुसार द्विजातिय को ही प्रणव का उच्चारण करना चाहिए। द्विजाति में भी जो संध्या, गायत्री आदि करता हो उसको। सबको नहीं तो सुरभ्ये नमः इस मंत्र को सड़क्षरा मंत्रो जाप्य छः अक्षर के मंत्र का जप करना चाहिए और इतना नहीं इस मंत्र की महिमा का वर्णन करते हुए देवीपुराण में भगवान वेदव्यास ने कहा है कि 'ॐ सुरभ्ये नमः' इस मंत्र का केवल अनुष्ठान पूर्वक एक लाख जप करले तो यह मंत्र सिद्ध हो जाता है और सिद्ध मंत्र समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाला हो जाता है। केवल एक लाख जप करलो पूर्ण होता है, पर एक शास्त्र की और आज्ञा है उसका भी हमें विचार करना पड़ेगा। **''कलो**

चतुर्गुणो प्रोक्तम्'' जितने भी मंत्रों की संख्या बताई गई है। अनुष्ठान जप संख्या उस संख्या का कलयुग में चौगुण प्रमाण माना गया है। जैसे पुराण में वचन आया है कि एक लाख ॐ सुरभ्ये नमः का एक लाख जप करने से सिद्धि हो जाएगी। तो उसका चौगुणा कितना हुआ चार लाख। तो कलियुग में इस मंत्र का चार लाख बार जप किया जाए तो संपूर्ण कामनाओं की पूर्ति हो जाएगी। कहते हैं इस मंत्र का नाम है कल्पपादप मंत्र ये कल्पवृक्ष के समान संपूर्ण कामनाओं को पूर्ण करने वाला है। एक और कथा देवीपुराण में आयी है, बोले एक बार की बात है सुरभि देवी ने दूध देना बन्द कर दिया गाय दूध छुटा जाती है ना! दूध देना बन्द कर देती है तो आदि गौ सुरभि माता ने दूध देना बन्द कर दिया तो जैसे ही सुरभि गौ ने दूध देना गोलोक में बन्द कर दिया कि धरती के भी सभी गायों का दूध बन्द हो गया। अब बताईए दूध ही बन्द हो जाएगा तो दही कहाँ से आएगा, घी कहाँ से आएगा? दूध बन्द हो गया सारे पदार्थ बन्द हो गये। देवताओं का हव्य और पितरों का कव्य गव्य पदार्थों में प्रतिष्ठित है। गाय के दूध, दही, घी से ही देवता और पितरों के हव्य की व्यवस्था होती है। जब सुरभि ने दूध देना बन्द कर दिया और दूसरी गायों में भी दूध आदि का अभाव हो गया तो महाराज बस सारे शुभ कर्म बन्द हो गये, पित्रकर्म, देवकर्म बन्द हो गए। सारी सृष्टि में तहलका मच गया और महाराज! ये सारी सृष्टि विनाश के कगार पर जा रही थी। सभी देवताओं को, ऋषिओं को बड़ी भारी चिन्ता हुई अब हमारे वैदिक धर्म का निर्वाह कैसे होगा तो सब ने ब्रह्माजी के पास जाकर ब्रह्माजी से प्रार्थना की, प्रभो! आप कृपा करके सृष्टि की रक्षा कीजिए। ब्रह्माजी ने कहा चलो हम सब लोग सुरभि माता के पास चलते हैं। ब्रह्माजी इन्द्रादि देवताओं के साथ सुरभि माता के पास गए हैं और सुरभि माता से प्रार्थना की है। हे क्षीरदा ! दूध, दही देने वाली ! हे धन देने वाली ! हे ज्ञान देने वाली ! बुद्धि देने वाली सुरभि देवी आपके चरणों में हमारा प्रणाम है। बहुत प्रार्थना की तो सुरभि देवी प्रसन्न हो गई। श्रीमद्भागवत् के बारहवें स्कन्द में जहाँ सुखदेवजी ने अन्तिम कलियुग का वर्णन किया है तो लिखा है जब घोर कलिकाल आ जाएगा तब क्या होगा? बोले उस समय गाय बकरी के आकार जैसी छोटी-छोटी हो जाएगी और क्या होगा? बोले जैसे बकरी दूध देती इतना थोड़ा-थोड़ा दूध गाय देने लग जाएगी। तो समझ लेना घोर कलियुग आ गया है। आज ऐसी स्थिती बन चुकी है। अरे! ऐसी स्थिती नहीं महाराज कहीं-कहीं तो कहने में बड़ी हँसी आती है छेरी ज्यादा दूध दे रही है। गाय का दोष नहीं है हमारे पापों का भयंकर यह दुष्परिणाम है। गाय दुग्ध से शुन्य होती चली जा रही है। नस्ल बिगड़ रही है। हमारे भारत वर्ष की गायें घटोध्नी हमारे धर्मसंघ वाले गुरुजी कहते थे। घट शब्द पारिभाषिक है। उध्न माने होता है ऐन। गाय का जो ऐन होता आचर। दूध का उसको उध्न कहते है संस्कृत में। गुरुजी कहते थे घटोध्नी घट शब्द पारिभाषिक है घट माने होता है चालीस शेर को एक घट माना गया है। चालीस शेर का एक घट इसका मतलब है गाय के ऐन में चालीस शेर जिस गाय के ऐन में रहता था उस गाय को घटोध्नी कहा जाता था। वैदिक मंत्र है जो मंत्र है इस मंत्र में प्रार्थना की गई है। हे भगवन! हमे केवल इस अंश से प्रयोजन है के भगवन ऐसी कृपा करें हमारे देश की गायें घटोघ्नी हो जाए, बहुत अधिक दूध देने वाली हो जाए और हमारी गायें घटोध्नी आज भी है अनको ठीक से उनकी नस्ल का संरक्षण, संवर्धन, संपोषण किया जाये, सुधार किया जाए तो एक गाय कितना ज्ञानन्दजी! इस पथमेड़ा में, गोशाला में यहाँ की नस्ल की गाय एक समय में बीस शेर दूध देने वाली है इसका मतलब घटोध्नी है। उनके आचर में चालीस शेर दूध है घटोध्नी। बोलो गोमाता की जय ! भक्त वत्सल भगवान की जय!

शेष अगले अंक में.....

भक्त बालक धन्ना जाट

गाँवमें धन्नाजी के पिता बड़े ही सीधे स्वभावके तथा साधु-संतोंकी सेवा करनेवाले थे। जब कोई रमते-राम साधु उधरसे निकलते, तब धन्नाजीके दरवाजेपर ही उनका आसन लगता। कुछ साधु दो-चार दिन भी टिक जाते थे। एक बार एक पण्डितजी धन्नाजीके घर आये। पण्डितजीने कुएँसे अपने हाथसे जल खींचकर स्नान किया और झोलीमेंसे शालग्रामजीको निकालकर उनका पूजन किया। धन्नाजी उस समय पाँच वर्षके थे। वे बड़े ध्यानसे पण्डितजीकी पूजा देखते रहे। जब पूजा पूरी हो गयी, तब उन्होंने पण्डितजीसे कहा-'पण्डितजी! मुझे भी एक ठाकुरजी दीजिये। मैं भी पूजा करूँगा।' भला, जाटके इतने छोटे लड़केको कोई शालग्राम कैसे दे? लेकिन बालक हठ करके रो रहा था। पण्डितजीने एक छोटा काला पत्थर पाससे उठाकर दे दिया और बोले- 'यही तुम्हारे ठाकुरजी हैं। तुम इनकी पूजा किया करें।'

धन्ना बड़े प्रसन्न हुए। वे अपने ठाकुरजीको कभी सिरपर रखकर कूदते, कभी छातीसे लगाकर नाचने लगते। खेल-कूद तो गया छूट और लग गये पूजामें। पण्डितजीको जैसे पूजा करते देखा था, वैसी ही पूजा वे अपनी समझसे करने लगे। चन्दन तो था नहीं, मिट्टीका तिलक किया भगवान्‌को, तुलसीके बदले वृक्षके हरे-हरे पत्ते चढ़ाये, कुछ तिनके जलाकर धुआँ दिखाया धूप समझकर और दीपक दिखाया। हाथ जोड़कर दण्डवत् की। दोपहरमें माताने बाजरेकी रोटियाँ खानेको दीं। धन्नाने उन रोटियोंको भगवान्‌के आगे रखा और नेत्र बंद कर लिये; बीच-बीचमें नेत्र खोलकर देख भी लेते थे कि भगवान् रोटी खाते हैं या नहीं। उन्होंने देखा कि ठाकुरजी तो रोटी खाते नहीं हैं-हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगे। प्रार्थना करनेपर भी जब रोटियाँ वैसी ही धरी रहीं, तब सोचने लगे-'ठाकुरजी मुझसे रूठ गये हैं, इसीसे मेरी रोटी नहीं खाते।' ठाकुरजी भूखे रहें तो धन्ना कैसे रोटी खा लें। उन्होंने रोटियाँ वनमें उठाकर फेंक दीं।

धन्नाका शरीर दुबला होता जाता है। वे उठ-बैठ भी कठिनतासे पाते हैं। उनके माता-पिता बड़े चिन्तित हैं। लड़केको क्या रोग है सो वे जानते नहीं। धन्नाको इसका कोई दुःख नहीं कि कई दिनोंसे वे भूखे हैं। उन्हें तो एक ही दुःख है-'ठाकुरजी नाराज हैं। रोटी नहीं खाते हैं। ठाकुरजी इतने सीधे भोले बालकसे कबतक नाराज रहते। बाजरेकी इतनी मीठी रोटियाँ उन्हें और कहाँ मिलतीं। धन्नाकी प्रेमभरी रोटियोंका स्वाद लेने वे एक दिन प्रकट हो गये और लगे भोग लगाने। जब आधी रोटी बच रही, तब बालक धन्नाने हाथ पकड़ लिया। वह कहने लगा-'ठाकुरजी! तुम इतने दिनोंतक नहीं आये। स्वयं भूखे रहे और मुझे भूखों मारा और आज आये हो तो सारी रोटी अकेले खा जाना चाहते हो? मैं क्या आज भी भूखों मरूँ? मुझे थोड़ी-सी रोटी भी नहीं दोगे!'

हँसकर भगवान्‌ने बची हुई आधी रोटी धन्नाको दे दी। ये नन्दके लाड़ले हैं ही बड़े विचित्र। इन्हें सुदामाके सड़े चिउरे द्वारकाके छप्पन भोगसे अधिक मीठे लगे थे। विदुरपत्नीके केलोंके छिलकोंके लोभवश दुर्योधनका सारा स्वागत-सत्कार ठुकरा दिया था इन्होंने। भीलनीके जंगली बेरोंका स्वाद इन्हें अयोध्या तथा जनकपुरके राजमहलोंमें थालपर बैठकर भी याद आता था। अब धन्नाकी रोटियोंका स्वाद

शेष पृष्ठ पर 22 पर.....

वीर बालिका मरीचि

भारतके उत्तरमें नेपाल और भूटानके बीच एक छोटा-सा देश है सिक्किम। यशपालसिंह वहीं एक सरकारी अधिकारी थे और मरीचि थी उन्हींकी कन्या- खिलते हुए फूलके समान सुन्दर और कोमल।

मरीचि अपना अधिकांश समय भगवान्‌की सेवामें ही व्यतीत किया करती थी। वह कभी-कभी आसपासके जंगलोंमें घूमने चली जाया करती थी पहाड़ी स्त्रियोंके समान बालोंमें छुरा घोंपकर।

'मरीचि! एक दिन उसके पिताने उसे कहा, 'अब तुम अकेली घरसे बाहर मत जाया करो, बेटी!'

'क्यों, पिताजी?'

'कुछ ऐसे नरपशु हमारे देशमें आये हुए हैं, जिनके रहते किसी भी भले घरकी बहिन-बेटीकी मान-मर्यादा कभी भी खतरेमें पड़ सकती है।' यशपालसिंहने कहा।

'अच्छा, पिताजी!' मरीचिने कहा। 'किंतु यदि ऐसा कोई अवसर आया भी तो आप निश्चिन्त रहें, निर्बलोंके बल वे सर्वशक्तिमान् प्रभु आपकी मरीचिकी रक्षा करेंगे।'

'वह तो सारे संसारकी रक्षा करते ही हैं, मरीचि! मैं यह जानता हूँ।' यशपालसिंहको अपनी पुत्रीके साहसपर पूर्ण विश्वास था। वह जितनी सुन्दर और गुणवती थी, उतनी ही साहसी भी।

एक दिन मरीचि अपनी बहिनके साथ पासवाले जंगलमें घूमने गयी थी। वहाँ वे दोनों बहिनें तितलियोंके समान इधन-से-उधर भागती फिर रही थीं-निर्भय और निःशंक खेलती हुई। उन्हें यह ज्ञात ही न था कि निकट ही एक झाड़ीके पीछे खड़ा एक अंग्रेज उनकी ओर घूर रहा है। मरीचिका सौन्दर्य देखकर अंग्रेजके हृदयमें पापवासना जाग रही थी।

वह अंग्रेज अपनेको रोक न सका। झाड़ीके बाहर आकर उसने मरीचिकी ओर संकेत किया और बोला 'इधर आओ, लड़की!' मरीचि सीधे स्वभाव उसके पास चली गयी।

साहब बहादुर खुश हो गये। वे टकटकी जमाकर मरीचिकी ओर देखने लगे। उसकी यह चेष्टा देखकर मरीचिको पहले तो कुछ हँसी आयी; किंतु फिर वह कुछ डरी और उसने लौटना चाहा।

साहब बोले-'लड़की! तुम जानती नहीं, मैं यहाँका अफसर बनाया गया हूँ?

'तो मुझे इससे क्या मतलब? मरीचिने कहा और वह लौटने लगी।

'रुको!' साहबने फिर कहा। 'इसका मतलब यह है कि मैं तुम्हें पसंद करता हूँ, तुम मेरे घरपर चलकर आरामसे रहो।'

मरीचि एकदम सन्न रह गयी, वह यह सोच ही रही थी कि साहबको क्या उत्तर दूँ कि वह नरपशु आगे बढ़ा। मरीचि और पीछेको हटी तो उसने आगे बढ़कर उसका हाथ पकड़ लिया।

मरीचि अब समझी उस अंग्रेजका अभिप्राय। उसने झटकेके साथ अपना हाथ अंग्रेजसे छुड़ाते हुए कहा- 'खबरदार, साहब बहादुर! अगर आगे बढ़े तो अच्छा नहीं होगा।

मगर साहबपर तो शैतान सवार था, उसने फिर आगे बढ़कर मरीचिका हाथ पकड़ लिया।

अब मरीचि शान्त न रह सकी, उसने मन-ही-मन द्रौपदीकी लज्जा बचानेवाले

शेष पृष्ठ पर 22 पर........

अग्र पूजा किसकी हो

(मलूकपीठाधीश्वर पूज्य श्री राजेन्द्रदासजी महाराज)

श्री सुरभ्ये नमः, श्री सुरभ्ये नमः, श्री सुरभ्ये नमः, श्री सुरभि माता की जय, श्री पंचगोमाता की जय, श्री सप्त गोमाता की जय, श्री अष्ठ गोमाता की जय, श्री मनोरमा माता की जय, श्री समृद्धि सुरभि माता की जय, श्री मनोरमा गोलोक महातीर्थ की जय, श्री सुरभि यज्ञ मण्डप की जय, श्री यज्ञ नारायण भगवान की जय, सब सन्तन की जय, सब विप्रन की जय, समस्त गोभक्तन की जय, जय जय श्री राधे, जय जय श्री सीताराम, हर हर महादेव।

हरि शरणम् भक्तवांच्छा कल्पतरू भक्तवत्सल शरणागतवत्सल गोविन्द प्रभु के महत्ती कृपा-करूणा से हम आप सब श्री मनोरमा गोलोक महातीर्थ में श्रीयज्ञ नारायण भगवान की सन्निधि में, परम् वन्दनीया पूज्या गोमाता की सन्निधि में जैसा कि अभी पाठकजी कह रहे थे कि प्रातः स्मरण का मंत्र आज चरितार्थ हो रहा है। **गावो ममाग्रतस्य सन्तु गावो में सन्तु प्रतिष्ठत। गावों में हृदयसन्तु गवांमध्ये वसाम्यहम्।।** ***''गायन में गोविन्द को बस वो ही भावे। आगे गाय पाछे गाय इत गाय उत गाय गोविन्द को गायन में बस वो ही भावे।''*** आज श्रीछीत स्वामीजी की वाणी भी चरितार्थ होती हुई दिखाई पड़ रही है। कल गोपूजन हो रहा था। सविधि पूजन आचार्यजी करा रहे थे तो हमारे मन में एक भाव उस समय उठ रहा था। धर्मराज युधिष्ठर ने **''राजसूय यज्ञ''** का अनुष्ठान आयोजित किया। वहाँ विचार हुआ कि इस यज्ञ में अग्र पूजा किसकी हो? महापण्डित शंड़ग वेद विदुष परम् विद्वान श्रीसहदेवजी ने अपना मनोभाव सभा में व्यक्त किया- यदपि मैं आयु में छोटा हूँ और यहाँ एक से एक ज्ञानवृद्ध, वयोवृद्ध महापुरुष विराजमान है फिर भी आप सबकी अनुमति हो तो मैं अपना मनोभाव व्यक्त करूँ। सब ने सहर्ष अनुज्ञा प्रदान की और श्री सहदेवजी ने कहा साक्षात् यज्ञ नारायण श्रीकृष्ण जहाँ विराजमान हो वहाँ अग्रपुजा किसकी हो यह प्रश्न ही निरर्थक है। जहाँ साक्षात यज्ञ पुरुष विराजमान हैं वहाँ अग्रपूजा किसकी हो?

इस दिव्य महा अनुष्ठान में यह प्रश्न ही नहीं उठा। सहज भगवत् संकल्प से, भगवत् प्रेरणा से अनुष्ठान की पूर्व संध्या पवित्र दीपावली के महापर्व पर, दिवाली पर्व पर संध्या के काल में भगवान की भी आराध्या, उपास्या यज्ञ नारायण भगवान श्री राम कृष्ण नारायण की भी आराध्या, उपास्या, वन्दनीया पूज्या गोमाता की अग्र पूजा सम्पन्न हुई। कल पाठकजी बार-बार हमारे मन में भाव आ रहा था कि देखो भगवान की कैसी कृपा करूणा है, गोमाता का यज्ञ है और भगवान की भी जो पूज्या हो उनकी पूज्या को छोड़कर अग्र पूजा और किसकी की जा सकती हैं? तो गोमाता की अग्र पूजा संपन्न हुई और देखिये जिसकी अग्र पूजा होती है संपूर्ण यज्ञ का संपूर्ण यज्ञ के निर्विघ्न सम्पादित होने का भार और अभ्युदय एवं परम् निःश्रेय की प्राप्ति का भार यह सब उसी पर होता है जिसकी अग्र पूजा होती है। भगवान की अग्र पूजा हुई भगवान के ऊपर भार था कि राजसूय यज्ञ निर्विघ्न, सविधि, सानन्द संपन्न हो। यहाँ भी सर्व समर्था गोमाता की अग्र पूजा हुई है इसलिए भले ही अग्नि स्थापन नहीं हुआ, अभी पूजन का क्रम भी चल रहा है पूर्णाहुति भी १० तारीख को होगी

लेकिन हमें तो ऐसा विश्वास हो गया कि अग्र पूजा गोमाता की हुई है, इसलिए यह यज्ञ निर्विघ्न संपन्न हो गया अब विधि तो चलेगी, क्रम चलेगा लेकिन यह यज्ञ सविधि निर्विघ्न संपन्न होगा और जिस पवित्र उद्देश्य को ध्यान में रख करके यह यज्ञ अनुष्ठान संपन्न किया जा रहा है उस लक्ष्य की अवश्य प्राप्ति होगी। अखिल विश्व में गोवंश का आदर होगा, संरक्षण होगा, संवर्धन होगा, यह धरती गोमय-गोमूत्र से अभी संचित होगी, पवित्र होगी ऐसा हम विश्वास व्यक्त करते हैं।

आज का जो पर्व है वो भी गोमाता से जुड़ा हुआ पर्व है गोवर्धन पूजा! वैसे सामान्य संस्कृतज्ञ भी और संस्कृतज्ञ नहीं भी हो केवल हिन्दी ही पढ़े हो, वो भी इतना अर्थ तो समझते हैं कि गोवर्धन माने! गो माने गाय, गोवंश और वर्धन माने वर्धेति यही हुआ ना? जो गोवंश का संवर्धन करें, संरक्षण करें, संवध र्न करें उन्हें गोवर्धन कहा जाता है। भगवान यज्ञेश्वर है, यज्ञ नारायण है, यज्ञ रूप है इस में किसी प्रकार का कोई सन्देह नहीं। भगवान के प्रथम पुत्र वेदगर्भ स्वयंभु श्रीब्रह्माजी महाराज ने संपूर्ण कामनाओं को पूर्ण करने वाला यज्ञ कहा है। यज धातु से यज्ञ शब्द निष्पन्न होता है और यज धातु का अर्थ है देव पूजा, संगति करण और दान ये तीनों कार्य जहाँ शास्त्र विधि से सम्पादित हो उसे यज्ञ कहा जाता है और ऐसे समय में भी भगवत् कृपा से, भगवत् संकल्प से, पूज्या गोमाता की कृपा से यथा साध्य प्रयत्न किया जा रहा है कि यज्ञ जिस अर्थ का प्रतिपादक है, बोधक है उसके अनुरूप यह महाअनुष्ठान सम्पन्न हो और हो रहा है। सविधि देव पूजन भी हो रहा है, सत्संग भी हो रहा है और जो दान-मान के पात्र है उन्हें यथा संभव उनका सत्कार भी किया जा रहा है। परम कर्मनिष्ठ, धर्मनिष्ठ दक्ष जैसा यजमान और महर्षि भृगु जैसा समर्थ आचार्य जो रमा वैकुंठ जाकर भगवान के वक्षस्थल में भी पादप्रहार कर सकता है ऐसा समर्थ आचार्य बड़े-बड़े ऋषि-महर्षि रहते वह यज्ञ भी सम्पन्न नहीं हो पाया। क्रिया दक्ष को दक्षा शिवमही में भी इस भाव का स्मरण किया है क्यों सम्पन्न नहीं हुआ? बोले भले ही यजमान श्रेष्ठ था, आचार्य श्रेष्ठ था किन्तु उस यज्ञ में यज्ञ शब्द का अर्थ घटित नहीं हो रहा था। देव पूजा तो हो रही थी पर उस देव पूजा का प्रयोजन था महादेव का तिरस्कार। तो महादेव का तिरस्कार जिस देव पूजन के मूल में हो वहाँ देव पूजन दम्भ मात्र बनकर रह गया और जहाँ संगति करण के नाम पर भयंकर राग, द्वेष का वातावरण हो रूद्राक्ष उपनयन धारण करने वाले शंकरजी का नाम लेने वाले शिवभक्त यज्ञशाला के परिसर में प्रवेश न करें ऐसा भयंकर वैमनस्यता का वातावरण हो वहाँ संगतीकरण कैसे सम्भव है? अब रही बात दान दक्षिणा की तो ब्राह्मण तो परम परम अधि ाकारी हैं ही हैं। श्रीमद् भागवत के चतुर्थ कन्द में भगवान पृथु स्वयं अपनी वाणी से कहते हैं। ब्राह्मण सब कुछ का अधिकारी है और वस्तुतः ब्राह्मणों को कोई दे नहीं सकता। क्या देगा कोई ब्राह्मणों को, ब्राह्मण अपना ही खाता है, अपना ही पहनता है और अपने ही तप से अर्जित पदार्थों को ग्रहण करता है। उस ब्राह्मण के भजन की तपस्या की शक्ति से क्षत्रीय आदि भी अपना निर्वाह करते हैं। ऐसा स्वयं भगवान के श्रीमुख का वचन है।

तो हम निवेदन यह कर रहे थे कि ब्राह्मण तो उत्तम दान-मान के पात्र हैं ही उनको तो क्या दक्षिणा मिली? जो दक्ष यज्ञ के ब्राह्मण कहीं विराजमान होंगे उनको रूद्रगणों

के द्वार दी गई दक्षिणा का अवश्यमेव स्मरण होगा। अरे भाई ! संसार का मनुष्य भी अपनी बेटी को, जमाता को दान-मान का पात्र मानता है। जहाँ छोटी पुत्री सती का भी सत्कार ठीक से नहीं हो पाया वहाँ बेचारे ब्राह्मणों को क्या दान-दक्षिणा मिलेगी? तो कहने का ताप्तर्य यह है कि नाम तो यज्ञ था पर यज्ञ शब्द का अर्थ वहाँ घटित नहीं हो रहा था। इसलिए यज्ञ सम्पन्न नहीं हुआ। हम लोग कितने भाग्यशाली हैं, यहाँ यज्ञ शब्द का प्रत्यक्ष अर्थ घटित होता हुआ दिखाई पड़ रहा है, हम सबके अनुभव में आ रहा है। पाठकजी ये जो महाराजजी के मन में जो प्रेरणा आयी कि सब भद्र होकर के बैठे, मुन्डन करा के बैठे इसका यहाँ की जनता को, श्रद्धालुओं को कितना लाभ हुआ नहीं कहा जा सकता? ऐसे भी लोग यहाँ होंगे जरूर वैसे यह शरीर ही एक दिन जाना है और बड़ा दुर्भाग्य है हम इन केसों का मोह त्याग नहीं कर पाते काम, क्रोध, मोह का क्या त्याग करेंगे? केसों में इतनी ममता है, केसों का त्याग नहीं कर पाते। ऐसे भी लोग होंगे शायद अपने निकट सम्बन्धी के मृत्यु के बाद भी अपने पिता, पितामह आदि अथवा अपने निकट सम्बन्धियों की मृत्यु के वैसे शास्त्र विध ी से भद्र होना चाहिए पर ऐसे भी लोग होंगे जो भद्र न हुए हो जिन्होंने मुन्डन न कराया हो पर ऐसे पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित लोग भी यहाँ का पवित्र वातावरण देख करके अनेक लोगों के शिखा प्रकट हो गई। शिखा सूत्र के बिना जो कुछ वैदिक कृत्य किया जाता है मनु महाराज कह रहे हैं उसका कोई फल प्राप्त होता नहीं। छोटे-छोटे बालक वे भी भद्र हो गए उनके मस्तक पर सुन्दर शिखा अब इस पवित्र वातावरण का दर्शन करके हृदय अत्यन्त आल्हादित हो रहा है। तो आज जो अत्यन्त पवित्र तिथि है वो श्री गोवर्धन पूजा की तिथि है और गोमाता की समृद्धि से जुड़ा हुआ महापर्व श्रीगोवर्धन पूजा का पर्व है। बहुत संक्षिप्त में कुछ गोवर्धन महाराज की बात निवेदन करके श्रीगिरीराजजी के सम्बन्ध में अत्यन्त संक्षिप्त अपने मनोभाव को व्यक्त हुए हम भगवत् कृपा से अपनी वाणी को विराम देंगे।

गर्ग संहिता में श्री गोवर्धन के प्राकट्य एवं किस प्रकार से गिरीराज गोवर्धन बृजमण्डल में आये उसका एक बड़ा सुन्दर निरूपण किया गया है और कहते हैं यह प्रश्न श्री नन्दबाबा ने सनन्दजी से किया है और सन्नन्दजी ने नन्दरायजी को इसका समाधान किया है। भगवान यज्ञेश्वर यज्ञ नारायण है, यज्ञ भगवान का स्वरूप है। भगवान यज्ञ संस्कृति की रक्षा के लिए इस धरती पर अवतार लेते हैं। भगवान यज्ञ के विरोधी नहीं है, भगवान अहंकार के विरोधी है। इन्द्र को जो अभिमान हो गया था उस अभिमान को नष्ट करने के लिए भगवान ने इन्द्र यज्ञ का निषेध किया और श्रीगोवर्धन यज्ञ का विधान किया। भगवान की आज्ञा सबने स्वीकार की उस समय नन्दबाबा ने पूछा कि गिरीगोवर्धन के उत्पत्ति का क्या आख्यान पुराणों में है उसको आप कृपा करके बताएँ। उन्हें गिरीराज क्यों कहा जाता है? इस प्रकार का प्रश्न किया है। और सन्नन्दजी ने इसका उत्तर देते हुए कहा कि एक बार हस्तीनापुर में परम धर्मनिष्ठ देवव्रत पितामह भीष्म से राजन पाण्डुजी ने पूछा था कि हे भगवन! श्रीकृष्ण परिपूर्ण परमात्मा हैं, अनन्तकोटि ब्रह्माण्डों के स्वामी हैं, गोलोकाधिपति हैं उन भगवान ने इस धरती पर कृपा करके अवतार ग्रहण किया और हे भगवन! उसीको भगवान जो अवतार ग्रहण करेंगे..... **शेष अगले अंक** में

श्रीसुरभि शतक

(पं.रामस्वरूपजी)

श्री गणेश गोपाल गो, दत्तचरण सिर नाय ।
गोशतक दोहा करूं, गो भक्तन सिर नाय ।।
ब्रह्मसुता श्रीमती गो, सुरभी परम पवित्र।
ऋद्धि-सिद्धि स्वाहा स्वधा, लक्ष्मी चरित पवित्र।।
भाव न भाषा युक्ति कछु, नहिं गम्भीर विचार।
गोभक्ती उर में जगी, कछु तुक दई सम्हार।।
सुन सन्तन की सीख को, सादर हिय में धार।
गोमाता महिमा कही, निज कल्याण विचार।।
हाथ जोर विनती करूँ, हे प्रभु दीजे दान।
गोसेवा चित दै करों, जा से हो कल्याण।।
गोभक्ती हिय में नहीं, ता सों अति अकुलांय।
दत्तशरण चरणन परौ, गोसेवा लग जांय।।
गोपालन कृषि कर्मरत, सब भारत के लोग।
ऋद्धि सिद्धि सुख सम्पदा, नहिं भयशोक न रोग।।
लौट चलौ भटके बहुत, पश्चिम नहीं निवास।
पूरव में घर है सुखद, गो संस्कृति विश्वास।।
भक्तमाल अरु भागवत, श्रुति पुराण इतिहास।
ऋषि मुनि राजा भक्तगण, सबै गाय के दास।।
जे जे भारत भूमि में, जन्मे ऋषि मुनि देव।
धर्म सनातन बुद्ध जिन, गोसेवक बस एव।।
गोमहिमा को कह सकै, सब देवन कौ रूप।
निज वाणी पावन करन, बरणों चरित अनूप।।
सबै उपनिषद गाय हैं, ग्वाला हैं गोपाल।
अर्जुन बछड़ा पन्हावै, ज्ञान दुहौ नन्दलाल।।
हरि भक्ति गोभक्ति में, गोभक्ति सविशेष।
हरि हू की गो इष्ट अति, सहज द्रवत अखिलेश।।
चार जुगन तिहुं काल में, ऐसौ नहिं कोउ भक्त।
हरि हरिजन सेवा निरत, जो न भयौ गोभक्त।।
मत अरु पंथ अनेक हैं, सबमें भेद अभेद।
परम पूज्य गो एक मत, हर भव सम्भव खेद।।
कर्म उपासन ज्ञान अरु, भक्ति परम पुरुषार्थ।
हरि प्राप्ति कौ सुगम पथ, गो भक्ति परमार्थ।।
सबै देव जेहि तन बसैं, ब्रह्मा विष्णु महेश।
सब मंगल कौ मूल गो, तीरथ रूप विशेष।।
सात्विकता की अवधि गो, गोमय मूत्र पवित्र।
गो की समता को करै, तीन लोक में मित्र।।
प्रेय श्रेय कौ मूल गो, धर्मादिक फल देत।
ब्रह्मज्ञान धन धान्य सुत, नरक दुख हर लेत ।।
भूमण्डल के मध्य में भारत धन्य महान।
गोसंस्कृति आधार से, जगतगुरु जग जान।।
एकहि साधें सब सधै, गोसेवा सुखमूल।
सर्वनाश कारण यहै, गोसेवा गये भूल।।
संस्कार सोलह सबै, जन्म विवाह प्रयाण।
पंचगव्य गोदान विधि, है श्रुतिवचन प्रमाण।।
गो बिन श्राद्ध न हो सकै, गो बिन यज्ञ न होय।
गो बिन शुभ गति न लहै, कोटि जतन कर कोय।।
गंगा नदी न गाय पशु, तुलसी वृक्ष न होय।
ब्राह्मण मनुज न मानिये, चारों हरि तन होय।।
हरि की करुणा ही प्रगट, धरौ गाय कौ रूप।
वत्सलता गो सें लही, भक्तवसल हरि रूप।।
हरि ही गो गो ही हरी, है भागवत प्रमाण।
ब्रह्मा वछड़ा चोर के, गो महिमा गये जान।।
है जग कौ आधार गो, गो सम देव न आन।
गो गोवर्धन पूजि हरि, कीन्हों वचन प्रमान।।
हरि आज्ञा विधि सृष्टि रच, कीन्हो यज्ञ विचार।
यज्ञ अंग गो ब्राह्मण, सकल जगत आधार।।
यज्ञ बिना नहिं वृष्टि है, यज्ञ बिना कृषि सृष्टि।
गो बिन यज्ञ न हो सकै, गो पालक सब सृष्टि।।
गो हित ही हरि अवतरैं, सबै पढ़ावें पाठ।
गो सेवक मम प्राण प्रिय, बाकी बारावाट।।
पृथ्वी गो तन धारिकें हरि पै करी पुकार।
धेनु दुःख नहिं सह सके, लीन्हो हरि अवतार।।
विप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार।
सबके सुख कौ मूल गो, कहें हरि बारम्बार।।
गाय देख वन्दन करै, कर प्रदक्षिणा नित्य।

सप्त द्वीपवति धरा की, प्रदक्षिणा फल मित्र।।
कामधेनु सब गाय हैं, या में संशय नाहिं।
श्रद्धा अरु विश्वास बिन, नहिं कल्याण लखाहिं।।
गायें परम पवित्र हैं, गायें मंगल खान।
सत्य सनातन धर्म गो, गाय स्वर्ग सोपान।।
सत्य वचन, हरि कौ यजन, सब तीरथ मख दान।
गोसेवा कौ पुण्यफल, गावैं अधिक पुरान।।
प्रार्याश्चत स्नान विधि, गंगाजल कौ पान।
सबसे अधिक महत्व है, गोरज कौ स्नान।।
हम देखें नित गाय को, गाय लखैं नित मोय।
हम उनके वे हमारी, जहां गाय हम होंय।।
गाय भूमि अरु सरस्वति, तीनों एक समान।
भूमिदान गोदान अरु विद्यादान महान।।
पंचभूत पर्यावरण, अंत:करण पवित्र।
गोसेवा सों होत है, ज्ञान बसै तब मित्र।।
भये धर्म निरपेक्ष हम, भ्रष्टाचार मिटांय।
बिन गो सेवा धर्म नहिं, सदाचार नहिं आंय।।
गाय दुधारु पशु नहिं, अभिमत फल दातार।
आध्यात्मिक महिमा अमित, ईश्वर का अवतार।।
धर्मरूप नन्दी प्रगट, शिव कल्याण स्वरूप।
धर्म बिना कल्याण नहिं, गोसवा सुख रूप।।
संस्कृति धर्म समाज की, जड़ गो संस्कृति जान।
गो भारत पहचान है, भारत माँ गो जान।।
गोमय में श्रद्धा नहीं, गोमय देख घिनाहिं।
वर्णशंकर सो जानिये, निश्चत हिन्दू नाहिं।।
दूध दही घृत पानकर, हृष्ट पुष्ट तन पांय।
सहज शतायू स्वस्थ रह, अन्त अमरपुर जांय।
भारत गांवन में बसौ, कृषि गोपालन हेत कर देत।।
गो कृपा धन धान्य लह, जग पालन कर देत।।
गो अमृत की नाभि है, गोरस अमृत देत।
वेद कहैं घृत आयु है, जरा मरण हर लेत।।
चायपान की चाह नहिं, दूध दही घी खांय।
सौ सें ऊपर जी रहे, जमराजा घबड़ायं।।
कच्चौ घर गोबर लिपौ, आंगन तुलसीधाम।
श्यामा गो बच्छड़ा सहित, सेवैं शालिगराम।

गोमय सें आंगन लिपौ, पंच गव्य कर पान।
गोमय के गोरी गणेश, पूजन वेद विधान।।
सानुकुल मुनि देव हरि, सहज चार फल पांय।
देव यज्ञ ऋषि ब्राह्मण, गो से पोषण पांय।।
बहुद्विज भोजन पुण्यफल, गो की तृप्ति करांय।
सद्गृहस्थ गोग्रास दे, अंत अमरपुर जांय।।
ब्राह्मण भोजन श्राद्ध में, कर न सकै यदि कोय।
घास खिला दे गाय को, श्राद्ध पूर्णता होय।।
प्रभु अर्पित गोग्रास दे, जो नित भोजन पांय।
अन्न दोष व्यापै नहिं, भुक्ति मुक्ति प्रभु पांय।।
भोर भये गो को नवैं, गुण गोविन्दहिं गांय।
शुभयात्रा मंगल सदा, बछड़ा गाय चुखांय।।
गोहित गोचर भूमि दे, जल कौ करें सुपास।
गो कौ हित चिंतन करैं, हरिपुर पावें बास।।
गऊ प्रसव क्षण गाय कौ, करै विप्र को दान।
अखिल धरा के दान कौ, सो निश्चय फल जान।।
सहज गाय बैठें जहाँ, सुख सों छोड़ें सांस।
बालक मिल क्रीडा करें, करें हरी तहँ वास।।
मानव संस्कृति रीढ़ गो, पृथ्वी सम जग पोष।
सर्वदेवमय हव्य कव्य, गव्य विश्व सुख कोष।।
रामायण इतिहास अरु वेदपुराण बखान।
आश्रम अभयारण्य थे, गोचर गोस्थान।।
गोचारण से गोत्र ऋषि, गोष्ठी सभा कहाय।
गवेषणा चिंतन विधा, दुहिता पुत्रि कहाय।।
ब्रह्मा मुख की सुरभि से, प्रगटी सुरभी नाम।
ब्रह्मसुता श्रीमति गो, अखिल लोक विश्राम।।
सूर्य चन्द्र के अंश से, प्रगटी गो सुखधाम।
अंतरिक्ष द्यौ भूमि गो, सरस्वती गुणधाम।।
गोमय से श्रीफल प्रगट, विल्व, कमल के बीज।
गाय मूत्र गुगुल प्रगट, हरि हर पूजन चीज।।
गोपति गोहित गोप्ता, वृषप्रिय वत्सल नाम।
गोविदांपति वृषोदर, वृष वृषभाक्ष हरिनाम।।
साधु विप्र हरि देव गो, वेदन करै विनाश।
जांय लोक पर लोक दोऊ, जल्दी होय विनाश।।
प्रजातंत्र कैसे कहैं, नहीं प्रजा कौ राज।

क्यों जनमत मानत नहीं, गोहत्या क्यों आज।।
गो बिना कैसे रहों, गोकुल कियौ पयान।
गोकुल जन्मोत्सव रचौ, गो हरि प्राण समान।।
गोशाला में गर्गजी, नाम करण हरि कीन्ह।
गोसेवा कौ फल महा, प्रगटे हरि सुख दीन्ह।।
नन्द यशोदा गाय ग्वाल, प्राणहु ते प्रिय मोय।
क्यों हू उऋण न हो सकों, जो गोसेवक होय।।
विधि पूंछी हरि सों प्रभू, गो सेवैं का देत।
मोक्ष पूतना हू दई, आपन को हरि देत।।
नन्द यशोदा नन्द नौ, कीरत औ वृषभान।
बृजमण्डल प्रगटे हरी, राधा जीवन प्रान।।
घर-घर ब्रह्म मुहूर्त में, घमर अमंगल नाश।
दूध दही नदियाँ बहैं, लक्ष्मी करै निवास।।
घुटरन चल गये गोष्ठ हरि, गोमय कीच लगांय।
हाथ पटक छप-छप हँसैं, अंगराग सुख पांय।।
ग्वालवेष हरि छवि सुनत,शुक मुनि से बोरांय।
निर्गुण मत फीकौ परौ, ब्रजवासिन गुण जांय।।
गोरज गोमय मूत्र गो, पय दधि माखन पान।
चोर-चोर दधि खात हैं, गाय कृष्ण कौ प्रान।।
गोचारण कर सखन संग, नहीं अघाने श्रीनाथ।
वल्लभ विट्ठल गिरी निकट, अष्ट सखन के साथ।।
कालिय फन ताण्डव रचौ, सौफन कियौ बेहाल।
निर्मल जल यमुना कियौ, गायन के प्रतिपाल।।
दावानल कौ पान कर, गायन रक्षा कीन्ह।
क्यों गऊ बिन मैं जी सकों, हों गायन आधीन।।
विधि हू बछड़ा चोर के, महिमा लखि पछतांय।
विनती कर पायन परे, गाय ग्वाल गुन गांय।।
सुन बंशी सब काज तजे, गो-गोपी गोपाल।
जड़ चेतन पक्षी पशू, सबहिं कियौ बेहाल।।
अमित रूप प्रगटे हरी, गो बछड़ा गोपाल।
वर्ष अवधि पय पान कर, सब को कियौ निहाल।।
गोविन्द गोकुल गाय गोप, गोपी मंगल रूप।
गोवर्धन गिरिराज बिच, मानसी गंगा रूप।।
गोवर्धन हित हरि धरौ, गोवर्धन कौ रूप।
भयौ नाम हरिदासवर्य, पूजौ हरि गिरिरूप।।

शेष अगले अंक में....

पृष्ठ संख्या 16 का शेष .....

भगवान्‌का ध्यान किया और दूसरे हाथसे अपने सिरमें लगा हुआ छुरा निकालकर साहबके पेटमें घोंप दिया। साहब हाय-हाय करते हुए घायल होकर पृथ्वीपर गिर पड़े।

मरीचि घर लौटी तो उसकी छोटी बहिनने सारी घटना अपने पिताको सुनायी। वे बोले-'मैंने कहा न था, बेटी! घरसे अकेली बाहर न जाया करो। चलो; जो हुआ प्रभुकी इच्छा।'

किंतु झगड़ा वहीं शान्त न हुआ। घायल अंग्रेजके वक्तव्यके अनुसार अंग्रेजोंने घटनाकी खोज की और यशपालसिंहका घर घेर लिया। दुर्गास्वरूपिणी मरीचि फिर अपनी छुरी लिये हुए बाहर निकली। उसने आनेवालोंको सारी घटना बतायी और उन्हें ललकारा भी।

मरीचि स्वयं उनसे दो-दो हाथ करनेको तत्पर थी; किंतु उसने देखा कि उसका कथन सुनकर आनेवाले अंग्रेजोंने स्वयं ही अपने घोड़े वापस मोड़ लिये हैं। म० सि०

पृष्ठ संख्या 15 शेष .....

इनकी जीभको मिल गया, सो रोज पुकारते ही उस जाटके लड़केकी रोटियाँ खाने दौड़ आते थे।

इस प्रकार धन्नाजी बचपनमें भगवान्‌के साथ खेलते रहे। उन्हें रोटी खिलाते रहे। बड़े होनेपर गम्भीरता आ गयी, सो ठाकुरजीने इनके साथ बालक्रीडा करना बंद कर दिया। भगवान्‌के आदेशसे काशी जाकर इन्होंने श्रीरामानन्दाचार्यजीसे दीक्षा ग्रहण की। गुरुदेवकी आज्ञासे फिर घर लौट आये। इन्हें सर्वत्र सब रूपोंमें अपने आराध्य भगवान्‌के ही दर्शन होते थे। संतोंकी सेवामें उनका बड़ा अनुराग था और साधु-सेवाके लिये अपना सर्वस्व लगा देनेमें भी ये हिचकते नहीं थे।

श्री कृष्ण और पुजारी का संवाद

एक गोसेवक

भगवान श्रीकृष्ण के दक्षिण भारत में एक प्रसिद्ध मंदिर में रात्री को बारह बजे कुछ आवाज होती है और पुजारी की नींद खुल जाती है। जिधर से आवाज आई उधर पुजारी देखता है तो उसे अंधेरे में एक छाया सा कोई बाहर जाते हुए दिखाई देता है। पुजारी को लगा कि मूर्ति चुराने के लिये कोई चोर आया है। अतः उसकी नजर सहसा ही गर्भगृह में गयी तो वहाँ से वास्तव में भगवान श्रीकृष्ण की वह मनमोहक मूर्ति गायब थी। पुजारी घबरा गया लेकिन प्रभु की माया के कारण वह चाहते हुए भी जोर से चिल्ला नहीं पा रहा था। चोर ! चोर ! ऐसे धीरे-धीरे चिल्लाता हुआ वह उस तरफ भागा जिधर उसे कोई जाता हुआ दिखाई दिया था। अंधेर में कुछ साफ दिखाई नहीं दे रहा था, लेकिन किसी के पाँवों की आवाज स्पष्ट आ रही थी। कौन है तूँ ? पुजारी ने कहा। सामने से एकदम साफ और मधुर आवाज आई- मैं कृष्ण हूँ, चोर नहीं हूँ।

ऐसे कहते ही एकदम प्रकाश हुआ और पुजारी को उसमें मूर्ति का वही रूप दिखाई दिया जो मंदिर में स्थापित था। अब पुजारी के कुछ भी समझ में नही आ रहा है कि यह सब क्या लीला है ? मूर्ति तो वही है, श्रृंगार भी वही है जो रात्री में भगवान को पधाराते समय किया था, सिवाय इसके आसपास में भी कोई नजर नहीं आ रहा है, आवाज भी मानव की नहीं लग रही है। पुजारी कभी डरता है तो कभी स्वयं ही स्वयं को सम्भालता है कि नहीं, नहीं मैं भगवान का पुजारी हूँ, मैं ब्राह्मण हूँ, नहीं-नहीं मुझे डर नहीं लग सकता। मुझे ऐसी-वैसी कोई प्रेतात्मा हो तो भी स्पर्श नहीं कर सकती। नजदीक से जाकर मुझे देखना चाहिये। मूर्ति तो वही लग रही है, पर वह आवाज कहाँ से आई होगी।

वह धीरे-धीरे नजदीक जाकर देखता है तो उसे कभी तो मूर्ति दिखाई देती है, कभी साक्षात् ही श्रीकृष्ण और वो भी अनेकों रूपों में। ठाकुरजी की सेवा करते समय वह जितने रूपों की मन में कल्पना करता था, वे सारे रूप उसे एक-एक कर दिखाई दे रहे थे। प्रभु की माया के प्रभाव से अब वह पूरी तरह से निर्भय हो चुका था।

अब वह भगवान के एकदम निकट चला गया और हिम्मत करके बोला- प्रभु आप कहाँ जा रहे हैं, मैं यह सब क्या देख रहा हूँ ? कहीं मुझे कोई स्वप्न तो नहीं आ रहा है ? आँखें फाड़-फाड़ कर फिर देखता है। हे प्रभु यह सब क्या हो रहा है ?

श्रीकृष्ण- हे पुजारी ! तेरे इन मंदिरों में मेरा दम घुटता है। आप सब लोग केवल अपनी सुविधा का ध्यान रखते हैं, मुझे कभी कोई नहीं पूछता कि मैं किसमें राजी रहता हूँ ? सभी आते हैं, हाथ जोड़ते हैं, जो कुछ भी मन में आता है प्रसाद के रूप में चढ़ाते हैं, अरबों-खरबों मुझसे माँगते हैं, घण्टी बजाते हैं और चल देते हैं। इससे ज्यादा और क्या वास्ता रखते हैं आप लोग मुझसे।

पुजारी- तो प्रभु क्या आप हमें छोड़कर कहीं अन्यत्र जा रहे हैं ?

श्रीकृष्ण- नहीं ! मैं आप लोगों को छोड़कर जा नहीं जा रहा हूँ। यहाँ मेरा दम घुट रहा है। गोशाला मेरा सबसे प्रिय स्थान है, वहाँ मैं सुखपूर्वक रहता हूँ, इसलिये वहाँ जा रहा

हूँ। तेरे इन मंदिरों से मुझे कोई वास्ता नहीं है। यह तो आप लोगों ने मूर्ति में प्राण-प्रतिष्ठा कर मुझे यहाँ बाँध दिया है, सो थोड़े समय के लिये कभी-कभी जब कोई उच्च कोटि के भक्त मंदिर में आते हैं तो उनके दर्शन करने के लिये मैं आ जाता हूँ, पर मन तो तभी मेरा गायों में ही रहता है। गायें और ग्वाले तो मेरे अपने निज जन हैं, उनके बिना मैं एक पल भी नहीं रह सकता। जबकि आप लोगोंकी दृष्टिमें गायों को रखना, उनकी सेवा करना एक कष्टसाध्य और फालतू का कार्य हैं। इसके स्थान पर बैंकों में धन जमा करने में ही विशेष रूची रहती है आप लोगों की।

पुजारी- प्रभु ! तो आप रोज ही गोशाला चले जाते हो क्या ?

श्रीकृष्ण- हाँ पुजारी ! ऐसा ही समझो।

पुजारी- प्रभु ! आप रोज वहाँ गोशाला जाते हो तब तो यह मूर्ति यहीं होती है, फिर आज आप मूर्ति रूप में क्यों जा रहे हो ? यह गर्भगृह अगर छोटा पड़ता हो तो इससे सुन्दर और विशाल दूसरा एक भव्य मंदिर बनवा लूँ आपके लिये।

श्रीकृष्ण- इस बहाने आप लोगों को कुछ कहना था, सो आज मुझे यह सब करना पड़ा। इतना सब कहने के बाद भी अभी दूसरा मंदिर बनाने की बात कर रहे हो पुजारी। तुम तो बड़े-बड़े विशाल और आलीशान अरबों रुपयों के मंदिर बनाने की ही बात करोगे, क्योंकि इससे तुम्हें सारी भौतिक सुख-सुविधाएँ जो मिल जाती है। इससे मुझे कोई सुख मिलता है या नहीं यह जानने की कौन परवाह करता है, क्योंकि मुझे तो यहाँ पर आपने निर्जीव एक पत्थर जो जान रखा है। केवल आनेवाले भक्तों के सामने तुम पूजा का ढ़ोंग मात्र करते हो। पूजा तो वह है जिसमें पुजारी मेरे मन के अनुकूल हर क्रिया करता है। यहाँ तो तुम्हें पता भी नहीं पड़ता है कि मेरे मन में क्या है, क्योंकि तुम मुझसे एकाकार ही नहीं रहते। संसार में एक से बढ़कर एक महंगा मंदिर बनाने की होड़ लगी हुई है। मंदिर के साथ भी कई प्रकार के खेल तमाशे, लोगों को आकर्षित करने के लिये साथ में बनाये जाते हैं, उनसे अलग से आय होती है। सब बातों में केवल आय का ही जरिया ढूढ़ रहे हो, मेरी भक्ति या मेरे सुख का नहीं। बताओ तो कितने लोग हैं जो मंदिर के साथ गोशाला की नींव डालते हैं ? अरे मूर्ख मैं स्वयं तो क्या मेरा चित्र भी बिना गाय के शोभा नहीं देता है। फिर क्या बिन गायों के सूना मेरा मंदिर शोभा देगा ? क्या सोना-चाँदी और हीरे-मोती जड़ने से मेरा मंदिर सजीव हो जायेगा ?

मंदिर मेरा घर होता है। अर्थात् नन्द बाबा का घर, याद करो वहाँ क्या-क्या था ? वहाँ का सबसे महत्वपूर्ण स्थान गोष्ठ हुआ करती थी। मेरा अधिकतम समय गोष्ठ में, गायों को चराने में या फिर ग्वालबालों के संग खेलने में ही गुजरता था। मुझे उसी में ही सुख मिलता है। तुम्हारे पास क्या है, मेरे लिये ? सुबह-शाम की आरती और दिनभर बजने वाली घण्टियों के सिवाय। प्रसाद और छप्पन भोग के नाम पर अशुद्धि और जहर के सिवाय क्या दे सकते हो आप मुझे। यह तो सब मुझे पूतना ने भी देने का प्रयास किया था, क्या हाल हुए थे उसके याद ही होगा सब आपको। क्या तुम्हें तनिक इतना भी ज्ञान नहीं कि मैं पूर्ण पवित्र और गोव्रतधारी हूँ। गो-गव्यों के अलावा और किसी से मेरा कोई प्रसाद बनता ही नहीं। क्या आपने इन बातों का कभी ख्याल रखा है ? श्रीकृष्ण आगे और पुजारी पीछे-पीछे, दोनों चले जा रहे हैं बातें करते-करते।

३ किमी चलने के बाद एक कच्ची बस्ती आई।

पुजारी- प्रभु ! यह तो कोई आदिवासियों की बस्ती आ गई लग रही है।

श्रीकृष्ण - हाँ पुजारी ! आपलोग तो सब बड़े सेठ बन गये हैं, सेठों की बस्ती में मेरा क्या काम ? वहाँ कुत्तों के अलावा घरों में क्या पालते हैं ? गोमाता के दर्शन भी करने हो तो आपकी बस्ती में कहाँ ? गायों को तो अब केवल कुछ आदिवासी ही रखते हैं। मैं अक्सर यहाँ गोसेवा के लिये आता रहता हूँ। नन्दबाबा के समय संत, ऋषि-मुनि, सेठ, किसान व गरीब से गरीब आदमी क्यों न हों, गो से विहिन तो कोई अभागा ही होता था। गोधन ही वास्तविक धन है, पर आप लोगों की सोच गिर गई है।

रात्री का दूसरा पहर समाप्त होने जा रहा है। गाँव में चारों तरफ गहरा सन्नाटा पसरा हुआ है। बेहद शांत और स्वच्छ वातावरण। गाँव के ऊपर की ओर पहाड़ से गिरते झरने की कल-कल की आवाज या फिर खेतों में किण-किण बोलती कंसारियों के अलाव कोई आवाज नहीं। यहाँ पर भी कुछ कुत्ते थे, जो एक बार थोड़े भौंक कर चुप हो गये जैसे कि कृष्ण हमेशा यहाँ आते हों इसलिये पहचान गये हों। गोपालकों के घरों में व गाँव के बाहर खेतों में छोटी-छोटी गोशालाएँ बनी हुई हैं। तीन से लेकर २० तक गायें हैं इनमें। लेकिन सभी दुबले-पतले, हड्डियों के ढ़ाँचे मात्र। कहीं कहीं खुले में बड़े-बड़े नन्दी (साँड) ऊंघ रहे हैं या फिर कोई बैठे-बैठे जुगाली कर रहे हैं, लेकिन ऐसा लग रहा है कि ये बड़े संतोषी हैं क्योंकि खाने को कोई खास नहीं मिलता है फिर भी चैन से बैठे हैं। गोशालाओं के बाहर गाँव में जगह-जगह गाय, बैल, बछड़े आदि सभी प्रकार का गोवंश दिखाई दे रहा है मगर देखने से ऐसा लग रहा है जैसे इन्होंने पिछले कई माह से अपने अधिकारों की माँग पर भूख हड़ताल कर रखी हो। कई बूढ़े गाय और बैल खड़े होने में असमर्थ हैं, इस कारण कई दिनों से एक ही जगह बैठे-बैठे सड़ गए हैं, उनके शरीरों से घावों की दुगन्ध आ रही है।

कई गोशालाएँ एकदम साफ-सुथरी लेकिन कईयों में गोबर और कीचड़ अटे पड़े हैं। अचानक चलते-चलते श्रीकृष्ण ऐसी ही एक गोशाला के आगे रुक जाते हैं जहाँ तीन-चार गायें और बूढ़े बैल बीमारी की खराब हालत में बैठे हैं। चारों तरफ कीचड़ और गंदगी पड़ी हुई है। देखने से अनुमान लगाया जा सकता है कि गोपालक स्वयं इसी हालत में होगा या फिर निकम्मा और आलसी प्रवृति का कोई बेहद लापरवाह इंसान होगा।

श्रीकृष्ण - चलो पुजारी ! आज हम इन गायों को मौत के मुँह से बाहर निकाल करते हैं और इस गोशाला की काया पलट कर देते हैं। वैसे तो चारों तरफ जिधर देखें उधर ही सेवा की बहुत अधिक आवश्यकता दीख रही है, पर हम दो जने अकेले तो यह सब कार्य एक साथ नहीं कर सकते। बारी-बारी से करेंगे, क्योंकि सभी गायें हमसे सहायता की पूर्ण उम्मीद रखती है।

पुजारी- जो आज्ञा प्रभु !

श्रीकृष्ण - आओ पुजारी ! पहले इस गाय को उठाकर खड़ी करने की कोशिश करते हैं। मैं इसके सींग पकड़कर आगे से उठाता हूँ, तुम पीछे से पूँछ पकड़कर उठाओ। लो लगाओ जोर, हे हे.....! यह देखो खड़ी कर दी। इसे अब कीचड़ से बाहर एक साईड में यहाँ लाओ। हाँ बस यहाँ थोड़ा सूखा है, यहाँ खड़ी कर देते हैं। ....शेष अगले अंक में

संस्था समाचार

गोधाम पथमेड़ा का वार्षिक समारोह धुमधाम से सन्पन्नः-

समृद्धि मैया के दर्शन-पूजन तथा गोऋषि श्रीस्वामीजी के दर्शन हेतु देश भर से ऊमड़े गोभक्त-गोसेवकजन।

गोधाम पथमेड़ा में 5 से 10 दिसम्बर,2011 तक **''पाटोत्सव एवं गो-सत्संग वार्षिक समारोह''** गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज के सान्निध य में गोसेवकों-गोभक्तों के अदभुत उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। विशाल गोधाम परिसर में चहुँओर नर-नारी एवं बच्चे गोसेवा , गोपूजन , गो-सत्संग , यज्ञादि कार्यो में भाग लिया।

10 दिसम्बर को भव्य एवं दिव्य स्तर पर दत्तात्रेय भगवान मंदिर में गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानंदजी महाराज के पावन सान्निध्य में ''दत्तात्रेय जयन्ती'' प्रातः 6 बजे से 10 बजे तक विभिन्न आयोजनों के साथ मनाई गई। गोपुष्टि महायज्ञ, गोसत्संग कथा, एवं रात्रि में मंचित गोचारण रासलीला में गोसेवकों एवं श्रद्धालुओं का उत्साह देखते ही बनता था। **दत्तात्रेय भगवान मन्दिर में दत्तात्रेय जयन्ति वज्रकवच, दत्तात्रेय माला जप तथा आरती के साथ मानाई गयी।**

गोधाम पथमेड़ा की प्रधान गोमाता **''श्री समृद्धि मैया''** श्रीमनोरमा गोलोक तीर्थ, नंदगांव से पथमेड़ा पधारी हुई थी,फलतः दर्शनार्थ गोसेवकों-गोभक्तों का ताँता लग रहता। प्रातः 9 से 12 और सायं 4 से 7 बजे गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानंदजी महाराज की नियमित सत्संग,दर्शन व आशीर्वचन का रामचौकी पर हजारों गोसेवक-गोभक्त लाभ अर्जित किया।

रासलीला ने दर्शकों का मन मोहा।

वृंदावन के सुप्रसिद्ध कलाकारों ने रासलीला में हजारों नर-नारी एवं बच्चों को संस्कृति, धर्म,अध्यात्म हास्य, व्यंग, और व्यवहार में **''गाय व गोविन्द''** के सम्बन्ध को लेकर विभिन्न प्रस्तुतियाँ के माध्यम से संदेश दिया। व्रज की मनमोहक भाषा एवं शैली ने रासलीला कलाकारों ने गोधाम पथमेड़ा, भगवान कश्ष्ण एवं गोमाता की महिमा के भजनों, संगीत एवं नारों के साथ प्रस्तुतियां देते तो हजारों श्रोता भी भक्ति रस में शामिल होने को मजबूर हो जाते।

सत्संग से सभी दोषों व विकारों का उन्मूलन :- गोभक्त छोगारामजी

दुनिया के सबसे बड़े गोसंरक्षण तथा आधुनिक गो-चिकत्सा केन्द्र गोधाम पथमेड़ा के धनवन्तरि विभाग में चल रही **''गो कथा सत्संग''** में व्यासपीठ से श्रीछोगारामजी गोभक्त ने प्रतिदिन संगति-कुसंगति के प्रभाव , सत्संग से व्यक्ति के कुसंगति से बचने का मार्ग तथा पहले धारण हो चुके कुसंग के दोषों ईर्ष्या ,द्वेष , परनिंदा व नकारात्मक सोच आदि का सत्संग से उन्मूलन आदि में गाय के सानिध्य की महिमा बताई। सैंकडो श्रोताओं ने कथा के दौरान **''गोव्रत''** धारण करने के साथ-साथ गोउपेक्षा , अत्याचार के विरूद्ध खड़े होने का संकल्प लिया । गोसत्संग कथा में गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानंदजी महाराज पधारते ही पंडाल गोमाता के नारों से गुंजने लगता था।

वृन्दावन से पधारे विद्वान पंडित श्रीरामस्वरूप पाण्डेय गो-अत्याचार मिटाने में शासन व समाज की विफलता को स्पष्ट करती कविताओं का वाचनकर श्रोताओं को गोसेवा-गोरक्षा रूपी क्रांति से सरोबार कर रोमांचित से भर देते।

22 से 28 अप्रेल,2012 को ''ब्रह्मऋषि श्रीखेतारामजी महाराज जन्मशताब्दी महामहोत्सव''

29 जनवरी ,2012 को बिजरोल खेड़ा से राष्ट्रव्यापी ''ब्रह्मचेतना संदेश रथ यात्रा''।

जगतपिता सृष्टि रचियता भगवान श्री ब्रह्मा के अंशावतार ब्रह्मऋषि श्रीखेतारामजी महाराज के प्राकट्य को अप्रेल 2012 में सौ वर्ष सम्पन्न होने जा रहे हैं। राजपुरोहित समाज कुल उद्धारक महान धर्म-अध्यात्म एवं समाजिक क्रान्ति के अग्रदुत श्रीखेतारामजी महाराज महाराज के 100वें जन्मोत्सव के उपलक्ष में जगदगुरू ब्रह्माचार्य प.पू. श्रीतुलछारामजी महाराज के पावन संकल्प व निश्रा तथा गोधाम पथमेड़ा संस्थापक प.पू. गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज के अनुपम व महान मार्गदर्शन में दिव्य एवं भव्य आयोजन **''ब्रह्मऋषिश्रीखेतारामजी महाराज जन्मशताब्दी महामहोत्सव''** की तैयारियां जोर-शोर से प्रारम्भ हो चुकी है।

22 से 28 अप्रेल 2012 तक शतकुण्डीय ब्रह्मा महायज्ञ, ब्रह्मा भागवत कथा, यज्ञोपवित एवं संस्कारशाला,गायत्री पुरश्चरण सहित अनेक अध्यात्मिक अनुष्ठान सम्पन्न होंगे तथा अन्तर्राष्ट्रीय चैनल ''संस्कार'' पर सीधा प्रसारण होगा। प.पू. श्रीधन्नारामजी महाराज के दिशा-निर्देश में एवं संतवृंदों की आज्ञानुसार प्रचार सामग्री तथा आयोजन स्थल परिसर की सफाई व समतलीकरण का कार्य प्रारम्भ हो चुका है।

जन्मशताब्दी महामहोत्सव श्रीब्रह्मज्योति दर्शन रथयात्रा

जन्मशताब्दी महामहोत्सव जन्मभूमि से वैदिक विधि से ब्रह्मज्योति का प्राकट्य कर 29 जनवरी, 2012 को भव्य रथों पर गोरजचरण, चरणपादूका एवं पावन कलश के साथ आसन पर स्थापित कर पुरे राष्ट्र तथा सम्पूर्ण राजस्थान में राजपुरोहित समाज के 1400 से अधिक गांवों-ढाणियों तक रथ पहुंचेगे।

''ब्रह्मज्योति दर्शन रथ'' बिजरोल खेड़ा से प्रस्थान करके भारतवर्ष के चारों धामों, सप्त पुरियों, सात नदियों, तीन समुद्रों, अनेक ज्योतिर्लिगों आदि तीर्थों से होते हुए देश के सभी प्रदेशों में समस्त देशवासियों में ब्रह्मतत्व,संस्कार, शुद्ध आहार, सामाजिक समरसता, राष्ट्रीय एकता एवं सेवा, त्याग व प्रेम की प्रेरणा का पावन संदेश देते हुए 20 अप्रेल,2012 को श्रीखेतेश्वर तीर्थ ब्रह्मधाम आसोतरा पहुंचेंगे। यात्रा के दौरान रथों में अखण्ड ब्रह्मज्योति दर्शन एवं श्रीगुरू चरणपादूका पूजन होगा। संक्षिप्त ब्रह्मायज्ञ, धर्माचार्य सम्मेलन,भक्ति संध्याएँ होगी तथा आमन्त्रण पत्रिका वितरण, सामाजिक पंजियन व सहयोग अंशदान संग्रह, प्रसाद एवं गोग्रास पात्र वितरण कार्यक्रम होंगे।

श्री ब्रज चौरासी कोस गो-यात्रा फरवरी 2012 से

''श्री ब्रज गो अभयारण्य'' जड़खोर की स्थापना एक महान अनुष्ठान की भांति परम भागवत गोऋषि पूज्य श्री दत्तशरणानंदजी महाराज की पावन प्रेरणा से हुई थी। इसी स्थान की महिमा से 9 फरवरी से 10 मार्च 2012 तक ''श्री ब्रज चौरासी कोस गो-यात्रा'' का आयोजन रखा गया है। यह पदयात्रा पूज्य गोमाताओं के संग चलेगी तथा गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज,मलूकपीठाधीश्वर प.पू. श्रीराजेन्द्रदासजी महाराज सहित ब्रजमंडल एवं देश के श्रेष्ठ महापुरूषों का सानिध्य रहेगा।

सांचोर में प्लास्टिक हटाओ अभियान।

परम भागवत गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज के आहवान पर सांचोर शहर को प्लास्टिक से मुक्त करने का विशेष अभियान 9 दिसम्बर,2011 को चला। पुरे शहर की सफाई में माननीय विधायक, नगरपालिका चैयरमेन सहित हजारों नागरिकों ने भाग लिया। अभियान समापन सरकारी सीनियर हाई सैकण्डरी स्कूल के प्रांगण में विशाल जनसभा को प.पू. गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज के आशीर्वचन के साथ हुआ।

व्रत-पर्वोत्सव

मकर संक्रान्ति महापर्व

साभार :– व्रतपर्वोत्सव–अंक

सूर्य का मकरराशि में प्रवेश करना 'मकर-संक्रान्ति' कहलाता है। इसी दिन से सूर्य उत्तरायण हो जाते है। शास्त्रोंमें उत्तरायण की अवधिको देवताओं का दिन तथा दक्षिणायनको देवताओं की रात्रि कहा गया हैं। इस तरह मकर-संक्रान्ति एक प्रकार से देवताओं का प्रभातकाल है। इस दिन स्नान, दान, जप, तप, श्राद्ध तथा अनुष्ठान आदिका अत्यधिक महत्व है। कहते हैं कि इस अवसरपर किया गया दान सौ गुना होकर प्राप्त होता है।

इस दिन घृत और कम्बल के दान का भी विशेष महत्व है। इसका दान करनेवाला सम्पूर्ण भोगों को भोगकर मोक्ष को प्राप्त होता है––

माघे मासि महादेव यो दद्याद् घृतकम्बलम्।
स भुक्त्वा सकलान् भोगान् अन्ते मोक्षं च विन्दति।।

मकर-संक्रान्तिके दिन गंगास्नान तथा गंगातटपर दान की विशेष महिमा है। तीर्थराज प्रयाग एवं गंगासागरका मकर-संक्रान्ति का पर्वस्नान तो प्रसिद्ध ही है।

उत्तर प्रदेशमें इस व्रत को 'खिचड़ी' कहते हैं। इसलिये इस दिन खिचड़ी खाने तथा खिचड़ी-तिल दान देने का विशेष महत्व मानते हैं। महाराष्ट्रमें विवाहित स्त्रियाँ पहली संक्रान्तिपर तेल, कपास, नमक आदि वस्तुएँ सौभाग्यवती स्त्रियों को प्रदान करती हैं। बंगालमें इस दिन स्नान कर तिल दान करनेका विशेष प्रचलन है। दक्षिण भारतमें इसे 'पोंगल' कहते हैं। असममें आज के दिन बिहूका त्योहार मनाया जाता है।

राजस्थान की प्रथाके अनुसार इस दिन सौभाम्यवती स्त्रियाँ तिलके लड्डू घेवर तथा मोतीचूर के लड्डू आदिपर रूपया रखकर वायनके रूप में अपनी सास को प्रणाम कर देती हैं तथा प्रायः किसी भी वस्तु का चौदहकी संख्यामें संकल्प कर चौदह ब्राह्मणों को दान करती हैं।

इस प्रकार देशके विभिन्न भागोंमें मकर-संकान्तिपर्वपर विविध परम्पराएँ प्रचलित हैं।

मकर-संक्रान्तिपर्वके विविध रूप

(श्री रामसेवकजी भाल)

भारतमें समय-समयपर हर पर्वको श्रद्धा, आस्था, हर्षोल्लास एवं अमंगके साथ मनाया जाता है।

पर्व एवं त्योहार प्रत्येक देशकी संस्कृति तथा सभ्यताको उजागर करते हैं। यहाँपर पर्व, त्योहार और उत्सव पृथक्-पृथक् प्रदेशोंमें अलग-अलग ढंग से मनाये जाते हैं।

मकर-संक्रान्तिपर्वका हमारे देशमें विशेष महत्त्व है। इस सम्बन्धमें संत तुलसीदासजी ने लिखा है-

माघ मकरगत रबि जब होई।
तीरथपतिहिं आव सब कोई।।

ऐसा कहा जाता है कि गंगा, यमुना और सरस्वतीके संगमपर प्रयागमें मकर-संक्रान्ति पर्व के दिन सभी देवी-देवता अपना स्वरूप बदलकर स्नानके लिये आते हैं। अतएव वहाँ मकर-संक्रान्ति पर्वके दिन स्नान करना अनन्त पुण्योंको एक साथ प्राप्त करना माना जाता है।

मकर-संक्रान्तिपर्व प्रायः प्रतिवर्ष १४ जनवरी को पड़ता है। खगोलशास्त्रियोंके अनुसार

इस दिन सूर्य अपनी कक्षाओं में परिवर्तन कर दक्षिणायन से उत्तरायण होकर मकर-राशिमें प्रवेश करते हैं। जिस राशि में सूर्यकी कक्षाका परिवर्तन होता है, उसे 'संक्रमण' या 'संक्रान्ति' कहा जाता है।

मकर-संक्रान्तिपर्वमें स्नान-दानका विशेष महत्त्व है। हमारे धर्मग्रन्थोंमें स्नानको पुण्यजनकके साथ ही स्वास्थ्य की दृष्टिसे भी लाभदायक माना गया है। मकर-संक्रान्तिसे सूर्य उत्तरायण हो जाते हैं, गरमीका मौसम आरम्भ हो जाता है, इसलिये उस समय स्नान करना सुखदायी लगता है।

उत्तर भारतमें गंगा-यमुनाके किनारे (तटपर) बसे गाँवों-नगरोंमें मेलोंका आयोजन होता है। भारतमें सबसे प्रसिद्ध मेला बंगाल में मकर-संक्रान्तिपर्वपर 'गंगासागर' में लगता है। गंगासागरके मेले के पीछे पौराणिक कथा है कि मकर-संक्रान्तिको गंगाजी स्वर्गसे उतरकर भगीरथके पीछे-पीछे चलकर कपिलमुनिके आश्रममें जाकर सागरमें मिल गयीं। गंगाजी के पावन जलसे ही राजा सगर के साठ हजार शापग्रस्त पुत्रोंका उद्धार हुआ था। इसी घटनाकी स्मृति में गंगासागर नाम से तीर्थ विख्यात हुआ और प्रतिवर्ष १४ जनवरीको गंगासागर में मेले का आयोजन होता है, इसके अतिरिक्त दक्षिण बिहारके मदार-क्षेत्र में भी एक मेला लगता है।

मकर-संक्रान्तिपर्वपर इलाहाबाद (प्रयाग)-के संगमस्थलपर प्रतिवर्ष लगभग एक मासतक माघमेला लगता है जहाँ भक्तगण कल्पवास भी करते हैं तथा बारह वर्षमें कुम्भका मेला लगता है। यह भी लगभग एक मासतक रहता है। इसी प्रकार छः वर्षमें अर्धकुम्भका मेला लगता है। विभिन्न परम्पराओं और रीति-रिवाजोंके अनुरूप महाराष्ट्रमें ऐसा माना जाता है कि मकर-संक्रान्ति से सूर्यकी गति तिल-तिल बढ़ती है, इसलिये इस दिन तिल के विभिन्न मिष्ठान बनाकर एक-दूसरेको वितरित करते हुए शुभ कामनाएँ देकर यह त्यौहार मनाया जाता है। महाराष्ट्र और गुजरात में मकर-संक्रान्ति पर्वपर अनेक खेल-प्रतियोगिताओं का भी आयोजन होता है।

पंजाब एवं जम्मू-कश्मीरमें 'लोहिड़ी' के नामसे मकर-संक्रान्तिपर्व मनाया जाता है। एक प्रचलित लोककथा है कि मकर-संक्रान्तिके दिन कंसने श्रीकृष्णको मारने के लिये लोहिता नामकी एक राक्षसीको गोकुल भेजा था, जिसे श्री कृष्णने खेल-खेलमें ही मार डाला था। उसी घटना के फलस्वरूप लोहिड़ी पर्व मनाया जाता है। सिन्धी समाज भी मकर-संक्रान्तिके एक दिन पूर्व इसे 'लाल लोही' के रूप में मनाता है।

तमिलनाडुमें मकर-संक्रान्तिको 'पोंगल' के रूपमें मनाया जाता है। इस दिन तिल, चावल, दालकी खिचड़ी बनायी जाती है। नयी फसल का चावल, दाल, तिलके भोज्यपदार्थसे पूजा करके कृषिदेवता के प्रति कृतज्ञता प्रकट की जाती है। तमिल पंचाग का नया वर्ष पोंगलसे शुरू होता है।

भारतीय ज्योतिषके अनुसार मकर-संक्रान्ति के दिन सूर्यके एक राशिसे दूसरी राशि में हुए परिवर्तन को अन्धकार से प्रकाश की ओर हुआ परिवर्तन माना जाता है। मकर-संक्रान्ति से दिन बढ़ने लगता है और रात्रिकी अवधि कम होती जाती है। स्पष्ट है कि दिन बड़ा होनेसे प्रकाश अधिक होगा और रात्रि छोटी होनेसे अन्धकार की अवधि कम होगी। यह सभी जानते हैं कि सूर्य ऊर्जाका अजस्र स्त्रोत है। इसके अधिक देर चमकनेसे प्राणिजगत्में चेतनता और उसकी कार्यशक्तिमें वृद्धि हो जाती है। इसीलिये हमारी संस्कृति में मकर-संक्रान्तिपर्व मनानेका विशेष महत्व है।

गोशाला

साभारः गोशाला

(पंचखण्ड पीठाधीश्वर प. पू. आचार्य श्री धर्मेन्द्रजी महाराज)

(२१०)

गौरी और गजनवी लुटेरा
अलादीन विषधर काला
बख्तियार औरंगजेब रिपु
दारुण दुःख देने वाला
हरे ! मुरारे ! गोशाला पर
कितने संकट आये हैं
यह सहकर सबको साहस से, खड़ी रही है
गोशाला.

(२११)

दाहर पृथ्वीराज सदृश नर
बप्पारावल से आला
राणा साँगा और प्रताप से
प्रकटे शूर लिये भाला
छत्रसाल गोविन्द शिवा से-
वैरागी सम वीरों से
तिलक सुभाष प्रभृति पुत्रों से, रही रक्षिता
गोशाला.

(११२)

मेरे गौरव इतिहासों के
पृष्ठ-पृष्ठ पर गोशाला
मेरी प्रिय भारत माता के
कण-कण में यह गोशाला
मेरे तन के रक्त-मांस में
गोशाला ही छायी है
मिट जाऊँगा मैं उस दिन जब नही रहेगी
गोशाला.

(२१३)

अणु अस्त्रों की विपुल वृष्टि से
शत्रु ! न मैं मिटने वाला
मुझको भस्म नहीं कर सकती
ब्रह्मस्त्रों की भी ज्वाला
अजर अमर अविनाशी हूँ मै
नही मिटुँगा वज्रों से
जब तक मेरे मन मन्दिर में बसी हुई है
गोशाला.

(२१४)

शताब्दियों तक संघर्षों का
कारण केवल -गोशाला,
उत्सर्गों का, बलिदानों का
कारण केवल -गोशाला
मैंने अपना रक्त बहा कर
गोशाला को रक्खा हैं
एवं मुझको रखने वाली जग में केवल
गोशाला.

(२१५)

राम-कृष्ण के इतिहासों का
सारसत्व है-गोशाला
स्मृतियों वेदों उपनिषदों में
एक तत्व है -गोशाला
धर्म स्वयं गो बनकर मानो
बसता है गोशाला में
देश धर्म एवं संस्कृति की परिभाषा है
गोशाला.

मासिक पत्रिका ''कामधेनु—कल्याण`` स्वामी ''श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला`` के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक स्वामी ज्ञानानन्द द्वारा सुभद्रा प्रिंटिंग प्रेस, विश्नोई धर्मशाला के पास, साँचौर (जालोर) से मुद्रित करवाकर ''श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला`` पथमेड़ा, पोस्ट—हाड़ेतर, तहसील—सांचौर, जिला—जालोर (राजस्थान) से प्रकाशित।

श्रीगोधाम पथमेड़ा द्वारा स्थापित, संचालित एवं प्रेरित गोशाला आश्रमों में संरक्षित गोवंश की संख्या

(1.)वृद्ध तथा कमजोर गायें - 37481 (2.) बीमार एवं विकलांग गायें -11416 (3.)नकार एवं कमजोर नंदी 10122
(4.) बीमार एवं विकलांग नंदी - 11195 (5.) छोटे वृषभ - 9646 (6.) स्वस्थ गायें, बैल एवं नंदी - 18967
(7.) छोटे बड़े बछड़े-बछड़ियाँ - 23633 तथा , वर्तमान में सभी शाखाओं में कुल गोवंश की संख्याः-122450 है।

विशेष नोटः- उपरोक्त लगभग 1 लाख 22 हजार 450 अनाश्रित गोवंश के अतिरिक्त पिछले वर्ष में अकाल से पीड़ित 1 लाख 80 हजार से अधिक निराश्रित गोवंश की प्रदेश के विभिन्न भागों में आपात गोसंरक्षण केन्द्र खोलकर सेवा-सुश्रुषा **जारी रही। बीते** वर्ष अच्छे मानसून के चलते स्वस्थ, गर्भस्थ एवं दुधारू गोवंश को राज्यभर में शिविरों व गोशालाओं से संतवृंदों के आह्वान पर सीधे किसानों को बड़ी संख्या में वितरित किया जा रहा था परन्तु अक्टुबर-नवम्बर 2010, में बेमौसमी अतिवृष्टि ने पूरे राज्य में घास-चारें को सड़ा-गला दिया, फलतः चहुँओर गोशालाओं में गोवंश बढ़ गया है। समय से पूर्व ही अकाल की भाँति आयी परिस्थितियों से विवश गोपालक अनुपयोगी गोवंश को निराश्रित छोड़ रहे हैं, जिन्हें भूख-प्यास एवं कसाईयों के क्रुर हाथों से बचाने का कार्य भी प्रदेशभर में पुनः युद्ध स्तर पर करना आवश्यक हो गया है। **जबकि वर्तमान वर्ष में सरकार से किसी भी प्रकार का अनुदान व सहयोग नहीं मिल रहा है।**

-: कार्यालय एवं कार्यकत्ताओं के सम्पर्क सूत्र :-

केन्द्रीय कार्यालय पथमेड़ा (02979) 287102,09 फैक्स 287122 मो. 7742093168, 9414131008, 9413373168, 9414152163
श्री मनोरमा गोलोक महातीर्थ, नंदगांव (02975) 287341,42, 44, 9460717101, टे.फै. 02975-287343, 7742093200
दक्षिणांचल कार्या. बैंगलोर 9449052168, 09829101008,09483520101, 080.22343108
मुम्बई (महाराष्ट्र एवं गोवा) (022) 66393598,9969465325,9969773359,9920871008

भायन्दर	9819772061,9324525247,9920871008
पूना	9673916779,9326960169,9920871008
सूरत	9825130640, 9909914721, 9374538576, 9825572768, 9426106315, 0261.2369777
वापी	9427127906, 0260-2427475
चैन्नई	9884173998,9952077188,944057448,9445165901,9380570040
हैदराबाद	9440230491,9849007572,9849115851
अहमदाबाद	9426008540,9427320969,9824444049,9925019721,9374541460(079)25320652,
पंजाब	9814036249, 9417155533, 9815468646, 9417380950,9417601223
दिल्ली	9811284207, 9810165260, 9312227141, 9811985292
कोलकत्ता	9903016181, 9339355679
जोधपुर	9414145448,9414136210, 9414177119
अंकलेश्वर	9909946972, 9427101391,9825323694
जयपुर	0141-2299090,9929231144,9829067010, 9001000300, 9413369945
हरियाणा	9416050318, 9812019003,9812307929, 9829598216
भीलवाड़ा	9829045270, 9414113284
बालोतरा	02988-223873,9413503100, 9414107818, 9460889930
बनासकांठा	9426408451,9979565700,9898869898,9427044445,9924941000
बाड़मेर	9413308582, 9414106528, 9414106331

अधिकाधिक गोभक्त मासिक ''कामधेनु-कल्याण'' के 10 वर्षीय आजीवन सदस्य बने। सदस्यता राशि 1100 रूपये का ड्राफ्ट ''कामधेनु प्रकाशन समिति'' के नाम से सम्पादकीय पते पर अथवा बी.ओ.बी शाखा सांचोर में ऑनलाईन खाता संख्या 29450100000326 में भेंजे।

RNI NO. RAJHIN/06/17167 POST REGD NO.RJ/SRO/9638/2012-2014

गोविन्द अरु गैयन में, अन्तरनिरन्तर नाहिं। गोविन्द ही गायन कौ रूप धारि आये हैं।।
सेवा करि सावधान इनकूं रिझायलेऔ। रीझिवेते इनके परम पद पाये हैं।।
अष्टप्रकृति पिण्ड, ब्रह्माण्ड करिवे कूं शुद्ध। राम कृष्ण हरि कलि धेनु बनि आये हैं।।

श्री ब्रज चौरासी कोस गो-यात्रा

दिनांक 8 फरवरी, 2012 से 10 मार्च, 2012 तक
फाल्गुन कृष्णपक्ष द्वितिया से चैत्र कृष्णपक्ष द्वितीया तक

गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महराज की प्रेरणा व द्वाराचार्य श्रीमंहत श्रीराजेन्द्रासजी महाराज की अध्यक्षता एवं भारत वर्ष के अनेक गोभक्त महापुरूषों की पावन सन्निधि में ब्रज चौरासी कोस परिक्रमा- यात्रा

(यात्रा में पधारने हेतु सम्पर्क करें।)

निवेदक
श्री ब्रज गो-यात्रा समिति
मलूकपीठ, वंशीवट,
वृन्दावन (उ.प्र.)

सम्पर्क सूत्र
7500830001, 7500830002
7500830003, 7500830004
7500830005

www.brijgauyatra.com Email. info@brijgauyatra.com